इलेक्ट्रो होम्योपैथी क्या है ?

जैसा कि हम सभी जानते हैं ,कि वनस्पतियाँ सजीव होती हैं उनमे भी जीव होता है !

वनस्पतियाँ मे एक प्रकार कि विद्युत ऊर्जा समाहित होती है । जो कि सूर्य के प्रकाश से मिलता है !

हमारे पैथी मे ये ही विद्युत ऊर्जा आसवन विधि द्वारा वनस्पतियाँ से तरल रूप मे एकत्रित कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी कि औषधि बनाई जाती है ।

वनस्पतियों कि विद्युत ऊर्जा पर आधारित इस चिकित्सा पद्धति मे इलेक्ट्रो शब्द इसलिए रखा गया है ।

होम्यो शब्द का अर्थ होम्यो स्टेटस से समझना चाहिये !

पैथी का तात्पर्य चिकित्सा कि एक विधि से है !

इस प्रकार तीन शब्दों को जोड़कर

इलेक्ट्रो होम्योपैथी

चिकित्सा पद्धति नाम रखा गया ।

: इलेक्ट्रो होम्योपैथी पूर्ण वनस्पतियों पर आधारित सरल चिकित्सा पद्धति है !

सरल कैसे ???

1- सर्व प्रथम इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियां मात्र 114 पौधों के अर्क से निर्मित कर 8 ग्रूप & 5 इलेक्ट्री सिटी और 1 स्किन वाटर के रूप मे कुल 38 औषधियों मे उपलब्ध है !

इलेक्ट्रो होम्योपैथी मे हमारे शरीर के प्रत्येक अंगों की अलग अलग औषधियां बनी हुई हैं !

जो कि अंगो कि बनावट एवं उनके कार्य को आवश्यकता अनुसार घटाने या बढ़ाने का कार्य करती है !

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के अनुसार पूरे विश्व मे सिर्फ दो प्रकार के रोग होते हैं ,

1- postive diasease

धनात्मक रोग

2- Nagetive diasease

ऋणात्मक रोग

क्रमशः................

: हमारे शरीर मे अंगो की बनावट एवं कार्य क्षमता निर्धारित है !

जो समान्य की अवस्था है !

समान्य की अवस्था से अंगो के बनावट अथवा कार्य क्षमता घटना या बढ़ना ही धनात्मक /ऋणात्मक रोग कहे जाते हैं !

धनात्मक रोग - जब हमारे शरीर के अंग समान्य की अवस्था से अधिक बढ़ जायें या कार्य करने लगें !

तो धनात्मक रोग होता है !

जैसे : चोट लगने पर बनावट समान्य से अधिक हो बढ़ जाता है ,

जैसा की हम जानते हैं ,कि हमारा हृदय एक मिनट मे 72 बार धड़कता है ,अगर ये 72 बार से ज्यादा धड़केगा ,तो धनात्मक रोग होगा !

क्रमशः...........

तो धनात्मक रोग होता हैं !

: हमारे शरीर मे अंगो की बनावट एवं कार्य क्षमता निर्धारित है !

जो समान्य की अवस्था है !

समान्य की अवस्था से अंगो के बनावट अथवा कार्य क्षमता घटना या बढ़ना ही धनात्मक /ऋणात्मक रोग कहे जाते हैं !

धनात्मक रोग - जब हमारे शरीर के अंग समान्य की अवस्था से घट जायें या कम कार्य करने लगें !

तो ऋणात्मक रोग होता है !

जैसे : घाव होने पर बनावट समान्य से कम हो जाता है ,

जैसा की हम जानते हैं ,कि हमारा हृदय एक मिनट मे 72 बार धड़कता है ,अगर ये 72 बार से कम धड़केगा ,तो ऋणात्मक रोग होगा !

क्रमशः...........

तो ऋणात्मक रोग होता हैं !

: इलेक्ट्रो होम्योपैथी पूर्ण वनस्पतियों पर आधारित सरल चिकित्सा पद्धति है !

सरल कैसे ???

1- सर्व प्रथम इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियां मात्र 114 पौधों के अर्क से निर्मित कर 8 ग्रूप & 5 इलेक्ट्री सिटी और 1 स्किन वाटर के रूप मे कुल 38 औषधियों मे उपलब्ध है !

इलेक्ट्रो होम्योपैथी मे हमारे शरीर के प्रत्येक अंगों की अलग अलग औषधियां बनी हुई हैं !

जो कि अंगो कि बनावट एवं उनके कार्य को आवश्यकता अनुसार घटाने या बढ़ाने का कार्य करती है !

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के अनुसार पूरे विश्व मे सिर्फ दो प्रकार के रोग होते हैं ,

1- postive diasease

धनात्मक रोग

2- Nagetive diasease

ऋणात्मक रोग

हमारे शरीर मे अंगो की बनावट एवं कार्य क्षमता निर्धारित है !

जो समान्य की अवस्था है !

समान्य की अवस्था से अंगो के बनावट अथवा कार्य क्षमता घटना या बढ़ना ही धनात्मक /ऋणात्मक रोग कहे जाते हैं !

धनात्मक रोग - जब हमारे शरीर के अंग समान्य की अवस्था से अधिक बढ़ जायें या कार्य करने लगें !

तो धनात्मक रोग होता है !

जैसे : चोट लगने पर बनावट समान्य से अधिक हो बढ़ जाता है ,

जैसा की हम जानते हैं ,कि हमारा हृदय एक मिनट मे 72 बार धड़कता है ,अगर ये 72 बार से ज्यादा धड़केगा ,तो धनात्मक रोग होगा !

तो धनात्मक रोग होता हैं !

अथवा

हमारे शरीर मे अंगो की बनावट एवं कार्य क्षमता निर्धारित है !

जो समान्य की अवस्था है !

समान्य की अवस्था से अंगो के बनावट अथवा कार्य क्षमता घटना या बढ़ना ही धनात्मक /ऋणात्मक रोग कहे जाते हैं !

ऋणात्मक रोग - जब हमारे शरीर के अंग समान्य की अवस्था से घट जायें या कम कार्य करने लगें !

तो ऋणात्मक रोग होता है !

जैसे : घाव होने पर बनावट समान्य से कम हो; जाता है ,

जैसा की हम जानते हैं ,कि हमारा हृदय एक मिनट मे 72 बार धड़कता है ,अगर ये 72 बार से कम धड़केगा ,तो ऋणात्मक रोग होगा !

तो ऋणात्मक रोग होता हैं !

डा.आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

: इलेक्ट्रो होम्योपैथी पूर्ण वनस्पतियों पर आधारित सरल चिकित्सा पद्धति है !

सरल कैसे ???

1- सर्व प्रथम इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियां मात्र 114 पौधों के अर्क से निर्मित कर 8 ग्रूप & 5 इलेक्ट्री सिटी और 1 स्किन वाटर के रूप मे कुल 38 औषधियों मे उपलब्ध है !

इलेक्ट्रो होम्योपैथी मे हमारे शरीर के प्रत्येक अंगों की अलग अलग औषधियां बनी हुई हैं !

जो कि अंगो कि बनावट एवं उनके कार्य को आवश्यकता अनुसार घटाने या बढ़ाने का कार्य करती है !

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के अनुसार पूरे विश्व मे सिर्फ दो प्रकार के रोग होते हैं ,

1- postive diasease

धनात्मक रोग

2- Nagetive diasease

ऋणात्मक रोग

हमारे शरीर मे अंगो की बनावट एवं कार्य क्षमता निर्धारित है !

जो समान्य की अवस्था है !

समान्य की अवस्था से अंगो के बनावट अथवा कार्य क्षमता घटना या बढ़ना ही धनात्मक /ऋणात्मक रोग कहे जाते हैं !

धनात्मक रोग - जब हमारे शरीर के अंग समान्य की अवस्था से अधिक बढ़ जायें या कार्य करने लगें !

तो धनात्मक रोग होता है !

जैसे : चोट लगने पर बनावट समान्य से अधिक हो बढ़ जाता है ,

जैसा की हम जानते हैं ,कि हमारा हृदय एक मिनट मे 72 बार धड़कता है ,अगर ये 72 बार से ज्यादा धड़केगा ,तो धनात्मक रोग होगा !

तो धनात्मक रोग होता हैं !

अथवा

हमारे शरीर मे अंगो की बनावट एवं कार्य क्षमता निर्धारित है !
जो समान्य की अवस्था है !

समान्य की अवस्था से अंगो के बनावट अथवा कार्य क्षमता घटना या बढ़ना ही धनात्मक /ऋणात्मक रोग कहे जाते हैं !

ऋणात्मक रोग - जब हमारे शरीर के अंग समान्य की अवस्था से घट जायें या कम कार्य करने लगें !

तो ऋणात्मक रोग होता है !

जैसे : घाव होने पर बनावट समान्य से कम हो जाता है ,

जैसा की हम जानते हैं ,कि हमारा हृदय एक मिनट मे 72 बार धड़कता है ,अगर ये 72 बार से कम धड़केगा ,तो ऋणात्मक रोग होगा !

तो ऋणात्मक रोग होता हैं !
🙏🏻🙏🏻🙏🏻🙏🏻🙏🏻
डा.आर.के.त्रिपाठी
बलरामपुर

: इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति मे रोग
🔜🔜🔜🔜🔜🔜

1-धनात्मक रोग (postive मेडिसिन)

अंग बनावट अथवा कार्य सामान्य से अधिक कार्य करने के परिणाम स्वरूप हुई विकृति को धनात्मक रोग कहा जाता है ।

2-ऋणात्मक रोग (Nagetive medicine)

अंगो के बनावट अथवा कार्य सामान्य से कम कार्य करने के परिणाम स्वरूप हुई विकृति ऋणात्मक रोग कहलाती है !

3-सामान्य की अवस्था
अंगों के बनावट अथवा कार्य को असामान्य अवस्था मे को इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधि द्वारा सामान्य अवस्था मे लाकर स्वस्थ किया जाता है !

अर्थात स्वस्थ शरीर ही सामान्य की अवस्था है !

🔜🔜🔜🔜🔜🔜

अब हमारी चिकित्सा पद्धति मे औषधियां भी

1- धनात्मक औषधि

2- ऋणात्मक औषधि

3- सामान्य औषधि

मे विभाजित हैं ।

धनात्मक औषधि -(postive medicine)

के अन्तर्गत

पौधों का मूल अर्क से

D1, D2, D3 & 1st dialution अथवा D4 तक की औषधि धनात्मक औषधि मानी जाती हैं ।

ऋणात्मक औषधि

(Nagetive medicine)

के अन्तर्गत D6,D7 से D10 या

3rd dialution से लेकर 30वें ,200वें ,1000वें & दस हज़ार तथा इससे भी अधिक उच्च डाल्युशन की औषधियां मानी जाती हैं

सामान्य औषधि

(न्यूट्रल मेडिसिन)

D5 अथवा 2nd dialution की औषधि मानी जाती हैं !

— — — — — —

इलेक्ट्रो होम्योपैथी मे धनात्मक रोग मे ऋणात्मक औषधि

तथा

ऋणात्मक रोग मे धनात्मक औषधि देकर रोगी के शारीरिक बनावट तथा अंगों के कार्य को सामान्य अवस्था मे लाकर रोगी को स्वस्थ किया जाता हैं !

🔜🔜🔜🔜🔜🔜

नोट :- डाल्युशन को लेकर कृपया कॉमेंट ना करें !

इलेक्ट्रो होम्योपैथी मे D1से D10 या उससे भी अधिक तक औषधि बना सकते हैं !

30वॉ ,200वॉ डाल्युशन ये सब होम्योपैथी के विधि से बनायी जाती है ।

: इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति मे

🔜🔜🔜🔜🔜

धूवत्व्कर्शण का नियम :

धनावेश अथवा ऋणावेश का बहुत ही महत्व है !

जिस प्रकार रोग एवं औषधि postive & nagetive मे बँटा है ,

उसी प्रकार हमारा शरीर भी धनात्मक (postive) &

ऋणात्मक (nagetive) मे बँटा हुआ है ।

💪🏻

हमारे शरीर का दाहिना भाग ,

😇

सिर का चँदिया ,

👫सामने का भाग तथा

हमारे शरीर के चमड़ी का ऊपरी भाग धनात्मक (postive) माना जाता है ।

इसके विपरीत हमारे शरीर का बायाँ भाग ,पैर का तलवा, पीछे का भाग & हमारे शरीर के चमड़ी का भीतरी परत ऋणात्मक (nagetive) माना जाता है ।

➖➖➖➖➖➖

आइये थोड़ा वैज्ञानिक दृष्टि कोण से समझें !

एक अणु मे धनात्मक ऊर्जा ,ऋणात्मक ऊर्जा & समस्थानिक ऊर्जा विद्यमान है ,

जिसे हम प्रोट्रान ,इलेक्ट्रान एवं न्युट्रान के रूप मे जानते हैं ।

हम जानते हैं कि

प्रोट्रान postive ऊर्जा

इलेक्ट्रान nagetive ऊर्जा

न्युट्रान न्यूट्रल ऊर्जा का प्रतीक है ।

धनात्मक ऊर्जा द्वारा सृष्टि का निर्माण

समस्थानिक ऊर्जा द्वारा सृष्टि का पालन

ऋणात्मक ऊर्जा द्वारा द्वारा सृष्टि का विनाश का कार्य होता है !

इसी प्रकार हमारे शरीर तो क्या समस्त ब्रह्मांड मे ये ही तीनों शक्तियां मूल रूप से कार्य करती हैं !

परन्तु इन तीनों शक्तियों से ऊपर भी एक ऊर्जा है ,
जिसे हम "आदि- शक्ति " या od force के नाम से जानते हैं !

डा.आर.के.त्रिपाठी
बलरामपुर

इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति मे रोग
🔜🔜🔜🔜🔜🔜

1-धनात्मक रोग (postive मेडिसिन)

अंग बनावट अथवा कार्य सामान्य से अधिक कार्य करने के परिणाम स्वरूप हुई विकृति को धनात्मक रोग कहा जाता है ।

2-ऋणात्मक रोग (Nagetive medicine)

अंगो के बनावट अथवा कार्य सामान्य से कम कार्य करने के परिणाम स्वरूप हुई विकृति ऋणात्मक रोग कहलाती है !

3-सामान्य की अवस्था
अंगों के बनावट अथवा कार्य को असामान्य अवस्था मे को इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधि द्वारा सामान्य अवस्था मे लाकर स्वस्थ किया जाता है !

अर्थात स्वस्थ शरीर ही सामान्य की अवस्था है !
🔜🔜🔜🔜🔜🔜
: ये समझना बहुत ज़रूरी है !

मान लीजिये ,किसी को चोट लग जाती है ,तो क्या होता है ?

शरीर कि बनावट बढ़ जाती है ,   यानि postive रोग हुआ !

और

कार्य करना रुक /घट जाता है ।

यानि nagetive रोग हुआ !

अब दवा क्या देना पड़ेगा ???

: शरीर की बनावट बड गयी तो कम करने के लीये (-)दवा .कम हो गयी तो (+)दवा देना जरुरी है

: इस पोस्ट को ध्यान से पढ़िये !

इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति मे रोग

🔜🔜🔜🔜🔜🔜

1-धनात्मक रोग (postive मेडिसिन)

अंग बनावट अथवा कार्य सामान्य से अधिक कार्य करने के परिणाम स्वरूप हुई विकृति को धनात्मक रोग कहा जाता है ।

2-ऋणात्मक रोग (Nagetive medicine)

अंगो के बनावट अथवा कार्य सामान्य से कम कार्य करने के परिणाम स्वरूप हुई विकृति ऋणात्मक रोग कहलाती है !

3-सामान्य की अवस्था

अंगों के बनावट अथवा कार्य को असामान्य अवस्था मे को इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधि द्वारा सामान्य अवस्था मे लाकर स्वस्थ किया जाता है !

अर्थात स्वस्थ शरीर ही सामान्य की अवस्था है !

🔜🔜🔜🔜🔜🔜

अब हमारी चिकित्सा पद्धति मे औषधियां भी

1- धनात्मक औषधि

2- ऋणात्मक औषधि

3- सामान्य औषधि

मे विभाजित हैं ।

धनात्मक औषधि -(postive medicine)

के अन्तर्गत

पौधों का मूल अर्क से

D1, D2, D3 & 1st dialution अथवा D4 तक की औषधि धनात्मक औषधि मानी जाती हैं ।

ऋणात्मक औषधि

(Nagetive medicine)

के अन्तर्गत D6,D7 से D10 या

3rd dialution से लेकर 30वें ,200वें ,1000वें & दस हज़ार तथा इससे भी अधिक उच्च डाल्युशन की औषधियां मानी जाती हैं

सामान्य औषधि

(न्यूट्रल मेडिसिन)

D5 अथवा 2nd dialution की औषधि मानी जाती हैं !

— — — — — —

इलेक्ट्रो होम्योपैथी मे धनात्मक रोग मे ऋणात्मक औषधि

तथा

ऋणात्मक रोग मे धनात्मक औषधि देकर रोगी के शारीरिक बनावट तथा अंगों के कार्य को सामान्य अवस्था मे लाकर रोगी को स्वस्थ किया जाता हैं !

🙇🙇🙇🙇🙇🙇

डा.आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

🔜🔜🔜🔜🔜🔜

नोट :- डाल्युशन को लेकर कृपया कॉमेंट ना करें !

इलेक्ट्रो होम्योपैथी मे D1से D10 या उससे भी अधिक तक औषधि बना सकते हैं !

30वॉ ,200वॉ डाल्युशन ये सब होम्योपैथी के विधि से बनायी जाती है ।

: इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति मे

🔜🔜🔜🔜🔜

धूवत्वकर्शण का नियम :

धनावेश अथवा ऋणावेश का बहुत ही महत्व है !

जिस प्रकार रोग एवं औषधि postive & nagetive मे बँटा है ,

उसी प्रकार हमारा शरीर भी धनात्मक (postive) &

ऋणात्मक (nagetive) मे बँटा हुआ है ।

💪🏻

हमारे शरीर का दाहिना भाग ,

😇

सिर का चँदिया ,

👫सामने का भाग तथा

हमारे शरीर के चमड़ी का ऊपरी भाग धनात्मक (postive) माना जाता है ।

इसके विपरीत हमारे शरीर का बायाँ भाग ,पैर का तलवा, पीछे का भाग & हमारे शरीर के चमड़ी का भीतरी परत ऋणात्मक (nagetive) माना जाता है ।

➖➖➖➖➖➖

आइये थोड़ा वैज्ञानिक दृष्टि कोण से समझें !

एक अणु मे धनात्मक ऊर्जा ,ऋणात्मक ऊर्जा & समस्थानिक ऊर्जा विद्यमान है ,

जिसे हम प्रोट्रान ,इलेक्ट्रान एवं न्युट्रान के रूप मे जानते हैं ।

हम जानते हैं कि

प्रोट्रान postive ऊर्जा

इलेक्ट्रान nagetive ऊर्जा

न्युट्रान न्यूट्रल ऊर्जा का प्रतीक है ।

💥💥💥💥💥💥

धनात्मक ऊर्जा द्वारा सृष्टि का निर्माण

समस्थानिक ऊर्जा द्वारा सृष्टि का पालन

ऋणात्मक ऊर्जा द्वारा द्वारा सृष्टि का विनाश का कार्य होता है !

इसी प्रकार हमारे शरीर तो क्या समस्त ब्रह्मांड मे ये ही तीनों शक्तियां मूल रूप से कार्य करती हैं !

परन्तु इन तीनों शक्तियों से ऊपर भी एक ऊर्जा है ,
जिसे हम "आदि- शक्ति " या od force के नाम से जानते हैं !

डा.आर.के.त्रिपाठी
बलरामपुर
: इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति मे

कुल 38 औषधियों का प्रयोग किया जाता है !

सभी को 8 ग्रूप मे अलग -अलग बाँटा गया है !
1- स्क्रौफौलौसौ ग्रूप
कुल 9 औषधि

S1,S2,S3,S5,S6,S10,S11, S12 & Slass

2- लिम्फ्तिकौ ग्रूप
केवल 1 दवा
L1

3-फेब्रीफुगो ग्रूप
केवल 2 दवा
F1 & F2

4 - एँगियातिको ग्रूप
केवल 3 दवा
A1, A2 & A3

5- पेक्टोरोल ग्रूप

कुल 4 दवा

P1 , P2 , P3 & P4

6-वेर्मीफुगो ग्रूप

केवल 2 दवा

Ver1 & Ver 2

7- वेनेरीयो ग्रूप

केवल 1 दवा

Ven1

8- कँसोरोसो ग्रूप

कुल 10 दवा

C1, C2, C3, C4, C5, C6, C10, C13, C15 & C17

तथा 5 बिजली & 1 स्किन वाटर

RE , BE (धनात्मक)

GE , YE (ऋणात्मक)

WE (उदासीन)

स्किन वाटर

APP

कुल 38 मेडिसिन

: जिस प्रकार Allopathy को 8 ग्रूप मे बाँटा गया है ,

उसी प्रकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी को भी 8 ग्रूप मे बाँटा गया है !

: इलेक्ट्रो होम्योपैथी मे औषधियां postive यानि धनात्मक कैसे बनती है !

वनस्पतियों मे बहुत सारे पौधे उत्तेजक एवं जहरीले होते हैं ,ये इनके प्राकृतिक गुण होते हैं !

जो पौधे इस प्रकार के होते हैं उन्हे केवल इसी प्रकार के पौधों के साथ मिलाया गया है !

~~~~~~~~~~~~

इलेक्ट्रो होम्योपैथी मे औषधियां nagetive यानी ऋणात्मक कैसे बनती हैं ?

वनस्पतियों मे बहुत सारे पौधे शिथिल होते हैं ,ये इनके प्राकृतिक गुण होते हैं!
~~~~~~~~~~~~

इस प्रकार के पौधौ को केवल शिथिलता वाले पौधों के साथ ही मिलाया जाता है !

जिस प्रकार Allopathy को 8 ग्रूप मे बाँटा गया है ,

उसी प्रकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी को भी 8 ग्रूप मे बाँटा गया है !

इलेक्ट्रो होम्योपैथी मे औषधियां postive यानि धनात्मक कैसे बनती है !

वनस्पतियों मे बहुत सारे पौधे उत्तेजक एवं जहरीले होते हैं ,ये इनके प्राकृतिक गुण होते हैं !

जो पौधे इस प्रकार के होते हैं उन्हे केवल इसी प्रकार के पौधों के साथ मिलाया गया है !

~~~~~~~~~~~

इलेक्ट्रो होम्योपैथी मे औषधियां nagetive यानी ऋणात्मक कैसे बनती हैं ?

वनस्पतियों मे बहुत सारे पौधे शिथिल होते हैं ,ये इनके प्राकृतिक गुण होते हैं!

इस प्रकार के पौधौ को केवल शिथिलता वाले पौधों के साथ ही मिलाया जाता है !

: इलेक्ट्रो होम्योपैथी v/s पंच तत्व निर्मित हमारा शरीर !

■■■■■■

हम जानते हैं कि हमारा शरीर पंच तत्व से बना है !लेकिन कैसे सिद्ध हो ?

आइये समझते हैं !

~~~~~~~~~~~

छिति जल पावक गगन समीरा !

पंच तत्व द्विज ,रचित शरीरा !!

~~~~~~~~~~~

हम जानते हैं कि मानव शरीर पंच महा भूतों या पंच तत्वों (पृथ्वी ,अग्नि ,वायु ,जल & आकाश) द्वारा निर्मित है !

■■■■■■

पंच तत्व हमारे शरीर में समाहित हैं ये कैसे माने !

सुनते तो बहुत आये हैं ।

🌎🌎🌎🌎🌎🌎

पृथ्वी तत्व : जिस प्रकार पृथ्वी के ऊपर मिट्टी की एक मोटी ,कठोर परत चढ़ी हुई है , उसी प्रकार हमारे शरीर पर भी चमड़ी की एक मोटी परत चढ़ी हुई है !
~~~~~~~~~~~

जिस प्रकार पृथ्वी पर घास फूस ,वनस्पतियाँ ,पेड़ पौधे इत्यादि उगे हुये हैं !

उसी प्रकार हमारे शरीर पर बाल उगे हुये हैं !

जिस प्रकार हमारे पृथ्वी के अन्दर मिट्टी के रेशे बने हुये ,एक दूसरे पर चढ़े हुये हैं

तथा अन्दर ही अन्दर जल का स्त्राव होता रहता है ,और बहुत से खनिज पदार्थ पृथ्वी के अन्दर छुपा होता है !

उसी प्रकार हमारे शरीर के अन्दर माँस पेशियां रेशे लिये हुये ,एक दूसरे पर चढ़े हुये हैं !

तथा अन्दर ही अन्दर रक्त और रस & जल का प्रवाह होता रहता है !

■■■■■■

जल तत्व : जिस प्रकार पृथ्वी के अन्दर जल का प्रवाह होता हैं उसी प्रकार हमारे शरीर के अन्दर भी रक्त ,रस & जल के रूप में जल तत्व पाया जाता हैं !

उसी प्रकार के खनिज लोहा ,चूना इत्यादि कैल्शियम ,आइरन के रूप में हमारे शरीर में पाये जाते हैं !

■■■■■■

अग्नि तत्व : जिस प्रकार पृथ्वी के अन्दर उष्मा होती है ,उसी प्रकार हमारे शरीर के अन्दर भी उष्मा होती है !

कच्चे भोजन को जठर अग्नि स्वयं पकाती हैं !शरीर का ताप अग्नि तत्व का उदाहरण हैं !

■■■■■■

वायु तत्व : जिस प्रकार पृथ्वी के अन्दर /बाहर वायु की उपस्थिति कई रूपों में हैं ,

उसी प्रकार हमारे शरीर में भी वायु की उपस्थिति अपान वायु ,ऊदान वायु सहित 5 वायु के रूप में बाँटा गया हैं !

■■■■■■

आकाश तत्व : ????

के बारे में आप लोग स्वयं विचार करें !

मुझे बतायें ! कि

हमारे शरीर में आकाश तत्व क्या हैं ??

पंच तत्वों का मानव शरीर में निहित पदार्थों को मिश्रित होने पर / शरीर में तत्वों का असंतुलन ही रोग का कारण है !

अत : असंतुलित तत्वों को संतुलित करना ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति का मूल उद्देश्य है !

■■■■■■

डा.आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

: इलेक्ट्रो होम्योपैथी v/s पंच तत्व निर्मित हमारा शरीर !

■■■■■■

हम जानते हैं कि हमारा शरीर पंच तत्व से बना है !लेकिन कैसे सिद्ध हो ?

आइये समझते हैं !

~~~~~~~~~~~~

छिति जल पावक गगन समीरा !

पंच तत्व द्विज ,रचित शरीरा !!

~~~~~~~~~~~~

हम जानते हैं कि मानव शरीर पंच महा भूतों या पंच तत्वों (पृथ्वी ,अग्नि ,वायु ,जल & आकाश) द्वारा निर्मित है !

■■■■■■

पंच तत्व हमारे शरीर में समाहित हैं ये कैसे माने !

सुनते तो बहुत आये हैं ।

🌎🌎🌎🌎🌎🌎

पृथ्वी तत्व : जिस प्रकार पृथ्वी के ऊपर मिट्टी की एक मोटी ,कठोर परत चढ़ी हुई है , उसी प्रकार हमारे शरीर पर भी चमड़ी की एक मोटी परत चढ़ी हुई है !

जिस प्रकार पृथ्वी पर घास फूस ,वनस्पतियाँ ,पेड़ पौधे इत्यादि उगे हुये हैं !

उसी प्रकार हमारे शरीर पर बाल उगे हुये हैं !

जिस प्रकार हमारे पृथ्वी के अन्दर मिट्टी के रेशे बने हुये ,एक दूसरे पर चढ़े हुये हैं

तथा अन्दर ही अन्दर जल का स्राव होता रहता है ,और बहुत से खनिज पदार्थ पृथ्वी के अन्दर छुपा होता है !

उसी प्रकार हमारे शरीर के अन्दर माँस पेशियां रेशे लिये हुये ,एक दूसरे पर चढ़े हुये हैं !

तथा अन्दर ही अन्दर रक्त और रस & जल का प्रवाह होता रहता है !

▪▪▪▪▪▪

जल तत्व : जिस प्रकार पृथ्वी के अन्दर जल का प्रवाह होता हैं उसी प्रकार हमारे शरीर के अन्दर भी रक्त ,रस & जल के रूप में जल तत्व पाया जाता हैं !

उसी प्रकार के खनिज लोहा ,चूना इत्यादि कैल्शियम ,आइरन के रूप में हमारे शरीर में पाये जाते हैं !

▪▪▪▪▪▪

अग्नि तत्व : जिस प्रकार पृथ्वी के अन्दर उष्मा होती है ,उसी प्रकार हमारे शरीर के अन्दर भी उष्मा होती है !

कच्चे भोजन को जठर अग्नि स्वयं पकाती हैं !शरीर का ताप अग्नि तत्व का उदाहरण हैं !

▪▪▪▪▪▪

वायु तत्व : जिस प्रकार पृथ्वी के अन्दर /बाहर वायु की उपस्थिति कई रूपों में हैं ,

उसी प्रकार हमारे शरीर में भी वायु की उपस्थिति अपान वायु ,ऊदान वायु सहित 5 वायु के रूप में बाँटा गया हैं !

▪▪▪▪▪▪

आकाश तत्व : ????

के बारे में आप लोग स्वयं विचार करें !

मुझे बतायें ! कि

हमारे शरीर में आकाश तत्व क्या हैं ??

पंच तत्वों का मानव शरीर में निहित पदार्थों को मिश्रित होने पर / शरीर में तत्वों का असंतुलन ही रोग का कारण है !

अत : असंतुलित तत्वों को संतुलित करना ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति का मूल उद्देश्य है !

▪▪▪▪▪▪

डा.आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

इलेक्ट्रो होम्योपैथी v/s पंच तत्व निर्मित हमारा शरीर !

■■■■■■

हम जानते हैं कि हमारा शरीर पंच तत्व से बना है !लेकिन कैसे सिद्ध हो ?

आइये समझते हैं !

~~~~~~~~~~~~

छिति जल पावक गगन समीरा !

पंच तत्व द्विज ,रचित शरीरा !!

~~~~~~~~~~~~

हम जानते हैं कि मानव शरीर पंच महा भूतों या पंच तत्वों (पृथ्वी ,अग्नि ,वायु ,जल & आकाश) द्वारा निर्मित है !

■■■■■■

पंच तत्व हमारे शरीर में समाहित हैं ये कैसे माने !

सुनते तो बहुत आये हैं ।

🌎🌎🌎🌎🌎🌎

पृथ्वी तत्व : जिस प्रकार पृथ्वी के ऊपर मिट्टी की एक मोटी ,कठोर परत चढ़ी हुई है , उसी प्रकार हमारे शरीर पर भी चमड़ी की एक मोटी परत चढ़ी हुई है !

जिस प्रकार पृथ्वी पर घास फूस ,वनस्पतियाँ ,पेड़ पौधे इत्यादि उगे हुये हैं !

उसी प्रकार हमारे शरीर पर बाल उगे हुये हैं !

जिस प्रकार हमारे पृथ्वी के अन्दर मिट्टी के रेशे बने हुये ,एक दूसरे पर चढ़े हुये हैं

तथा अन्दर ही अन्दर जल का स्त्राव होता रहता है ,और बहुत से खनिज पदार्थ पृथ्वी के अन्दर छुपा होता है !

उसी प्रकार हमारे शरीर के अन्दर माँस पेशियां रेशे लिये हुये ,एक दूसरे पर चढ़े हुये हैं !

तथा अन्दर ही अन्दर रक्त और रस & जल का प्रवाह होता रहता है !

■■■■■■

जल तत्व : जिस प्रकार पृथ्वी के अन्दर जल का प्रवाह होता हैं उसी प्रकार हमारे शरीर के अन्दर भी रक्त ,रस & जल के रूप में जल तत्व पाया जाता हैं !

उसी प्रकार के खनिज लोहा ,चूना इत्यादि कैल्शियम ,आइरन के रूप में हमारे शरीर में पाये जाते हैं !

■■■■■■

अग्नि तत्व : जिस प्रकार पृथ्वी के अन्दर उष्मा होती है ,उसी प्रकार हमारे शरीर के अन्दर भी उष्मा होती है !

कच्चे भोजन को जठर अग्नि स्वयं पकाती हैं !शरीर का ताप अग्नि तत्व का उदाहरण हैं !

■■■■■■

वायु तत्व : जिस प्रकार पृथ्वी के अन्दर /बाहर वायु की उपस्थिति कई रूपों में हैं ,

उसी प्रकार हमारे शरीर में भी वायु की उपस्थिति अपान वायु ,ऊदान वायु सहित 5 वायु के रूप में बाँटा गया हैं !

■■■■■■

आकाश तत्व : ????

के बारे में आप लोग स्वयं विचार करें !

मुझे बतायें ! कि

हमारे शरीर में आकाश तत्व क्या हैं ??

जैसा की हम सभी लोग जानते हैं, कि पिता को आकाश कहा जाता हैं !

तो एक पिता अपने बच्चे को ऐसा क्या देता हैं कि सिर्फ वो ही पिता बनता हैं ?

और कोई नही बन सकता ??

D.N.A ही एक ऐसी चीज़ हैं जो पिता से बच्चे में स्थानांतरित होती हैं !

तो मानव शरीर में D.N.A ही आकाश तत्व हैं !

पंच तत्वों का मानव शरीर में निहित पदार्थों को मिश्रित होने पर / शरीर में तत्वों का असंतुलन ही रोग का कारण है !

अत : असंतुलित तत्वों को संतुलित करना ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति का मूल उद्देश्य है !

▪▪▪▪▪▪

🙎🏻🙎🏻🙎🏻🙎🏻🙎🏻🙎🏻

डा.आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में पाँचों तत्वों को नियन्त्रित करने के लिए

5 एलेक्ट्रिसिटी बनी हैं !

RE = अग्नि तत्व

BE = जल तत्व

GE = पृथ्वी तत्व

YE = वायु तत्व

WE = आकाश तत्व

इलेक्ट्रो होम्योपैथी v/s पंच तत्व निर्मित हमारा शरीर !

▪▪▪▪▪▪

हम जानते हैं कि हमारा शरीर पंच तत्व से बना है !लेकिन कैसे सिद्ध हो ?

आइये समझते हैं !

〰〰〰〰〰〰

छिति जल पावक गगन समीरा !

पंच तत्व द्विज ,रचित शरीरा !!

〰〰〰〰〰〰

हम जानते हैं कि मानव शरीर पंच महा भूतों या पंच तत्वों (पृथ्वी ,अग्नि ,वायु ,जल & आकाश) द्वारा निर्मित है !

▪▪▪▪▪▪

पंच तत्व हमारे शरीर में समाहित हैं ये कैसे माने !

सुनते तो बहुत आये हैं ।

🌎🌎🌎🌎🌎🌎

पृथ्वी तत्व : जिस प्रकार पृथ्वी के ऊपर मिट्टी की एक मोटी ,कठोर परत चढ़ी हुई है , उसी प्रकार हमारे शरीर पर भी चमड़ी की एक मोटी परत चढ़ी हुई है !

जिस प्रकार पृथ्वी पर घास फूस ,वनस्पतियाँ ,पेड़ पौधे इत्यादि उगे हुये हैं !

उसी प्रकार हमारे शरीर पर बाल उगे हुये हैं !

जिस प्रकार हमारे पृथ्वी के अन्दर मिट्टी के रेशे बने हुये ,एक दूसरे पर चढ़े हुये हैं

तथा अन्दर ही अन्दर जल का स्त्राव होता रहता है ,और बहुत से खनिज पदार्थ पृथ्वी के अन्दर छुपा होता है !

उसी प्रकार हमारे शरीर के अन्दर माँस पेशियां रेशे लिये हुये ,एक दूसरे पर चढ़े हुये हैं !

तथा अन्दर ही अन्दर रक्त और रस & जल का प्रवाह होता रहता है !

■■■■■■

जल तत्व : जिस प्रकार पृथ्वी के अन्दर जल का प्रवाह होता हैं उसी प्रकार हमारे शरीर के अन्दर भी रक्त ,रस & जल के रूप में जल तत्व पाया जाता हैं !

उसी प्रकार के खनिज लोहा ,चूना इत्यादि कैल्शियम ,आइरन के रूप में हमारे शरीर में पाये जाते हैं !

■■■■■■

अग्नि तत्व : जिस प्रकार पृथ्वी के अन्दर उष्मा होती है ,उसी प्रकार हमारे शरीर के अन्दर भी उष्मा होती है !

कच्चे भोजन को जठर अग्नि स्वयं पकाती हैं !शरीर का ताप अग्नि तत्व का उदाहरण हैं !

■■■■■■

वायु तत्व : जिस प्रकार पृथ्वी के अन्दर /बाहर वायु की उपस्थिति कई रूपों में हैं ,

उसी प्रकार हमारे शरीर में भी वायु की उपस्थिति अपान वायु ,ऊदान वायु सहित 5 वायु के रूप में बाँटा गया हैं !

■■■■■■

आकाश तत्व : ????

के बारे में आप लोग स्वयं विचार करें !

मुझे बतायें ! कि

हमारे शरीर में आकाश तत्व क्या हैं ??

जैसा की हम सभी लोग जानते हैं, कि पिता को आकाश कहा जाता हैं !

तो एक पिता अपने बच्चे को ऐसा क्या देता हैं कि सिर्फ वो ही पिता बनता हैं ?

और कोई नही बन सकता ??

D.N.A ही एक ऐसी चीज़ हैं जो पिता से बच्चे में स्थानांतरित होती हैं !

तो मानव शरीर में D.N.A ही आकाश तत्व हैं !

🏸🏸🏸🏸🏸🏸

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में पाँचों तत्वों को नियन्त्रित करने के लिए

5 एलेक्ट्रिसिटी बनी हैं !

RE = अग्नि तत्व

BE = जल तत्व

GE = पृथ्वी तत्व

YE = वायु तत्व

WE = आकाश तत्व

पंच तत्वों का मानव शरीर में निहित पदार्थों को मिश्रित होने पर / शरीर में तत्वों का असंतुलन ही रोग का कारण है !

अत : असंतुलित तत्वों को संतुलित करना ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति का मूल उद्देश्य है !

■■■■■■

डा.आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बिजलियों का प्रभाव !

■■■■■■

सफेद बिजली (WE)

मिश्रित प्रकृति उदासीन औषधि

~~~~~~~~~~

प्राकृतिक गुण : सफेद बिजली का प्राकृतिक गुण प्रदाह नाशक हैं ।

तंत्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम) के माध्यम से शरीर के समस्त अंगों पर पूर्ण प्रभावी औषधि हैं

■■■■■■

सफेद बिजली का प्रभाव

मस्तिष्क , मेरुदंड , स्नायु तंत्र , स्नायु केन्द्र , वात नाड़ी मण्डल , लघु मस्तिष्क , वात संस्थान , स्पाईनल कार्ड & स्पाईनल नर्व एवं उसके सभी अंशों पर हैं !

शरीर के समस्त रोगों के लिये ये न्यूट्रल औषधि रामबाण के समान हैं !

मिश्रित प्रकृति के सभी रोगियों के लिये ये परम कल्याणकारी औषधि हैं !

■■■■■■

पीली बिजली

पित्त प्रकृति ऋणात्मक औषधि

~~~~~~~~~~~~

प्राकृतिक गुण : पीली बिजली का प्राकृतिक गुण उत्तेजना नाशक या शिथिलता दायक हैं !

यह उत्तेजित अंगों या अंग तंत्रों को शिथिल कर किसी भी प्रकार के उपद्रव को शान्त कर देती हैं !

यदि लाल बिजली के दुष्प्रभावों से उत्पन्न उपद्रव को तुरन्त शान्त कर देती हैं !

मस्तिष्क के तनाव को समाप्त कर शान्ति प्रदान करती हैं !

पित्त प्रकृति वाले व्यक्तियों के अनुकूल औषधि हैं

चूँकि ये ऋणात्मक औषधि हैं ,इसलिए समस्त धनात्मक रोगों में परम कल्याण कारी औषधि हैं !

■■■■■■

लाल बिजली

कफ़ प्रकृति धनात्मक औषधि

~~~~~~~~~~~~
~~~~~~~~~~~~

प्राकृतिक गुण : इस औषधि का प्राकृतिक गुण उत्तेजक ,रक्त संचालक ,प्रदाह नाशक ,वात एवं गठिया वात नाशक हैं !

यह तंत्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम) सहित शरीर के समस्त आन्तारीय अंगों के कार्यों की शिथिलता समाप्त कर तत्काल प्रभाव से रोगों को नष्ट करने वाली उत्तेजक धनात्मक औषधि हैं !

ये कफ़ प्रकृति जनित रोगों की राम बाण औषधि हैं !

■■■■■■

नीली बिजली

रक्त प्रकृति धनात्मक औषधि

~~~~~~~~~~~~

प्राकृतिक गुण : नीली बिजली का प्राकृतिक गुण धमनियों के रक्त स्त्राव को तत्काल नियन्त्रित करना !

मासिक धर्म को नियमित एवं नियन्त्रित करना !हृदय को शक्ति एवं उत्तेजना प्रदान करना ! प्रदान नाशक ,बल वर्धक ,रक्त पूरक ,पित्त पथरी नाशक रक्त प्रकृति की धनात्मक औषधि हैं !

धमनी में रक्त के कॉंपोज़िशन के खराबी से उत्पन्न सभी रोगों की मुख्य औषधि हैं !

जैसे : रक्त का क्षय होना ,

रक्त का किसी भी अंग से प्रचुर मात्रा में निकलना ,

रक्त का दूषित होना

रक्त में RBC & WBC की कमी होना इत्यादि रक्त की सभी बीमारियों की मुख्य औषधि हैं !

इसका प्रयोग बाह्य एवं आन्तरिक दोनो प्रकार से किया जाता हैं !

ये ब्लड कैंसर की उत्तम औषधि हैं ।।

■■■■■■

हरी बिजली

वात प्रकृति ऋणात्मक औषधि

~~~~~~~~~~~~

प्राकृतिक गुण : इस औषधि का प्राकृतिक गुण चोट ,कैंसर नाशक ,शिराओं का रक्त स्त्राव रोधक , दर्द नाशक ,

घाव भरने वाली ,रक्त शोधक ,गठिया बाई एवं हृदय की ऊष्णता शान्ति कारक औषधि हैं !

यह निगेटिव हरी बिजली शिरीय रक्त संचार यानी शिराओं पर विशेष प्रभाव रखती हैं ! शिराओं में रुके हुये रक्त को आगे बढ़ाने का रास्ता बनाती हैं !

ये शिरीय रक्त स्त्राव को रोक कर , हृदय की उत्तेजना को शांत करती हैं तथा शिराओं में उत्पन्न रक्त अवरोध को हटाकर रक्त का संचार करती हैं !

इसका प्रयोग बाह्य एवं आंतरिक दोनो प्रकार से किया जाता हैं !!

ये कैंसर की सर्वश्रेष्ठ औषधि हैं !

डा.आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

: इलेक्ट्रो होम्योपैथी में

ए.पी पी (APP)

■■■■■■

ये औषधि समस्त चर्म रोगों में प्रयोग की जाती हैं !

इस औषधि का प्राकृतिक गुण रक्त स्त्राव रोकने वाली , पस (मवाद) नाशक ,घाव भरने वाली ,

चेहरे को साफ करने वाली , दाग -धब्बा नाशक , त्वचा को स्वस्थ & सामान्य करने वाली ,

त्वचा पर खुरदुरापन ,सिलवट ,

ख़राश वाले दाने तथा भूसी उतरने वाले त्वचा रोगों को जड़ से समाप्त कर त्वचा को मुलायम व चमकदार कान्तिमय बनाता हैं !

डा.आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

: इलेक्ट्रो होम्योपैथ में संरचनात्मक औषधि

■■■■■■

शरीर के किसी भी अंग में उतकीय रोगों के अवस्था के आधार पर Cansoroso group

की औषधियां बनायी गई हैं !

इस श्रेणी की औषधियों का प्रभाव शारीरिक संरचना या

टिश्यूस (कोशिकाओं) में उत्पन्न anatomical खराबी को ठीक करने के लिये किया जाता हैं !

■■■■■■

C1- टिश्यूस की प्रथम अवस्था की बनावट या शारीरिक संरचना को ठीक करने की प्रमुख औषधि हैं !

नये या पुराने किसी भी रोग में उपकला ऊतक या इपीथीलीयम ऊतक की खराबी को ठीक करने की मुख्य औषधि हैं !

शरीर के जिस जिस अंग में भी इपीथीलीयम ऊतक खराब हैं वहाँ C1 का ही प्रयोग किया जाना चाहिये !

ये स्त्रियों के जनन अंग तन्त्र की प्रमुख औषधि मानी जाती हैं !

इस औषधि का कार्य क्षेत्र

शरीर के समस्त अंग , ग्रंथियों ,लसिका ,

जनंनेद्रियो , त्वचा के नीचे पाये जाने वाले सेल (cell) एवं सूत्रों ,

पैतृक रोगों , सेक्सुअल

ट्रांसमिटेड infection इत्यादि पर मुख्य प्रभाव हैं !

इस औषधि का प्राकृतिक गुण कैंसर , रसौली ,गाँठ ,गुमड , मासिक ऋतु स्त्राव को ठीक कर नियमित करने वाली ,दर्द नाशक ,रक्त शोधक ,त्वचा एवं माँस पेशियों के रोग नाशक ,शक्ति दायक & वीर्य वर्धक आदि हैं !!

■■■■■■

स्त्रियों में प्रसव के 15 दिन पहले C1 का प्रयोग 3rd dialution में करते रहने से बच्चा बिना ऑपरेशन के आसानी से पैदा हो जाता हैं !

1st dialution का प्रयोग जल्दी जल्दी करने पर ऑक्सिटोसिन इंजेक्शन की आवश्यकता नही पड़ती !

प्रसव के बाद दूध ना उतरने पर C1+A1

1st Dialution में 1-1 घंटे पर देने से माँ को दूध

उतर जाता हैं !

& दूध का उत्पादन बन्द करने के लिये

nagetive dose की दवा देना चाहिये !

■■■■

यानी शरीर से हो रहे तरल का स्त्राव रोकने के लिये नगेटिव dose का प्रयोग करें !

और शरीर से तरल का स्त्राव शुरू करने के लिये postive dose का प्रयोग करें !

डा.आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

इलेक्ट्रो होम्योपैथ में संरचनात्मक औषधि

■■■■■■

शरीर के किसी भी अंग में उतकीय रोगों के अवस्था के आधार पर Cansoroso group

की औषधियां बनायी गई हैं !

इस श्रेणी की औषधियों का प्रभाव शारीरिक संरचना या
टिश्यूस (कोशिकाओं) में उत्पन्न anatomical खराबी को ठीक करने के लिये किया जाता हैं !

■■■■■■

C1- टिश्यूस की प्रथम अवस्था की बनावट या शारीरिक संरचना को ठीक करने की प्रमुख औषधि हैं !

नये या पुराने किसी भी रोग में उपकला ऊतक या इपीथीलीयम ऊतक की खराबी को ठीक करने की मुख्य औषधि हैं !

शरीर के जिस जिस अंग में भी इपीथीलीयम ऊतक खराब हैं वहाँ C1 का ही प्रयोग किया जाना चाहिये !

ये स्त्रियों के जनन अंग तन्त्र की प्रमुख औषधि मानी जाती हैं !

इस औषधि का कार्य क्षेत्र
शरीर के समस्त अंग , ग्रंथियों ,लसिका ,
जननेंद्रियो , त्वचा के नीचे पाये जाने वाले सेल (cell) एवं सूत्रों ,
पैतृक रोगों , सेक्सुअल
ट्रांसमिटेड infection इत्यादि पर मुख्य प्रभाव हैं !

इस औषधि का प्राकृतिक गुण कैंसर , रसौली ,गाँठ ,गुमड , मासिक ऋतु स्त्राव को ठीक कर नियमित करने वाली ,दर्द नाशक ,रक्त शोधक ,त्वचा एवं माँस पेशियों के रोग नाशक ,शक्ति दायक & वीर्य वर्धक आदि हैं !!

■■■■■■

स्त्रियों में प्रसव के 15 दिन पहले C1 का प्रयोग 3rd dialution में करते रहने से बच्चा बिना ऑपरेशन के आसानी से पैदा हो जाता हैं !

1st dialution का प्रयोग जल्दी जल्दी करने पर ऑक्सिटोसिन इंजेक्शन की आवश्यकता नही पड़ती !

प्रसव के बाद दूध ना उतरने पर C1+A1

1st Dialution में 1-1 घंटे पर देने से माँ को दूध

उतर जाता हैं !

& दूध का उत्पादन बन्द करने के लिये

nagetive dose की दवा देना चाहिये !

■■■■

यानी शरीर से हो रहे तरल का स्त्राव रोकने के लिये नगेटिव dose का प्रयोग करें !

और शरीर से तरल का स्त्राव शुरू करने के लिये postive dose का प्रयोग करें !

डा.आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

: इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दृष्टि में

■■■■■■

मधुमेह क्या है ?

■■■■■■

मधुमेह एक ऐसी स्थिति है जिसमें हमारे दैनिक भोजन से प्राप्त होने वाला शुगर या ग्लूकोज खून में पहुंचने के बाद ऊर्जा में परिवर्तित नहीं होता है ।

यह अपरिवर्तित शुगर हमारे खून में बनी रहती और ब्लड-शुगर के स्तर को सामान्य से अधिक बढ़ा देती है ।

C17 औषधि का प्रभाव अग्नाशय या पैंक्रियाज नामक वाह्य एवं अन्त : स्त्रावी ग्रन्थि पर हैं ! इसके अन्त : स्त्रावी ग्रन्थि से इंसुलिन एवं ग्लुकौन नामक हार्मोन स्त्रावित होता हैं ! जो की शरीर कार्बोहाइड्रेट मेटाबोलिक का नियंत्रक हैं !

यह शरीर के सभी कोशिकाओं के लिये ग्लूकोज ग्रहण करने की क्षमता को बढ़ा देती हैं !

जिसके परिणाम स्वरूप कोशिकाएँ रक्त से अधिक ग्लूकोज ले कर उपयोग करने लगती हैं !

इंसुलिन कम स्त्राव से शरीर की कोशिकाएँ रक्त में संचारित ग्लूकोज नही ले पाती , जिससे रक्त में ग्लूकोज की अधिक मात्रा होने पर मूत्र के साथ उत्सर्जित होने लगता हैं !

ये ही मधुमेह कहलाता हैं !

■■■■■■

मधुमेह का क्या कारण है ?

हमारे शरीर का एक अंग है,   जिसे पैनक्रियाज या अग्नाश्य के रूप में जाना जाता है,

जब विद्युत ऊर्जा पैंक्रियाज को नही मिल पाती हैं ,तब पैंक्रियाज का अल्फा या बीटा सेल अधिक या कम अथवा बिल्कुल कार्य करना बन्द कर देते हैं !

जिससे रक्त में सुगर का संतुलन बिगड़ जाता हैं !

तब पैंक्रियाज को सफेद बिजली / यानी WE की धनात्मक खुराक से ठीक किया जाता हैं !

पैंक्रियाज बीटासेल्स इन्सुलिन को स्रावित करते हैं ।

इंसुलिन का कार्य, शुगर को कोशिकाओं में पहुँचाना है ,

जहां चयापचय (मेटाबोलिक) संबंधी गतिविधियों द्वारा ग्लूकोज/शुगर को ऊर्जा में परिवर्तित कर दिया जाता है ।

पैनक्रियाज की खराबी इंसुलिन के स्राव को धीमा या समाप्त कर देती है!

जब इंसुलिन का उत्पादन समान रहता हैं !और इंसुलिन को लाने व ले जाने वाले रक्त एवं रस इंसुलिन को ग्रहण नही करते ,

तब A3 & L1 नामक औषधि का प्रयोग प्रयोग करना चाहिये !

रक्त द्वारा लेने तथा कोशिकाओं तक पहुँचने के बाद भी रक्त इंसुलिन को अवमुक्त नही करता !

तब A2 या VEN 1 नामक दवा का प्रयोग करना चाहिये !

यदि कोशिकाये स्वयं इंसुलिन को ग्रहण ना कर पा रही हो ,तो C5 (नगेटिव DOSE) नामक दवा का प्रयोग करें !!

जिसके परिणामस्वरूप ब्लड-शुगर में वृद्धि होने लगती है जिसे मधुमेह कहा जाता है ।

■■■■■■

दैनिक जीवन को मधुमेह कैसे प्रभावित करता है ?

मधुमेह से ग्रसित व्यक्ति अत्यधिक थकान, बार-बार प्यास लगना, वजन घटने, भूख में वृद्धि, घावों के भरने में सामान्य से अधिक समय लगना, मुँह सूखने और पैरों में दर्द का बना रहना आदि समस्याओं से घिर जाता है!

यदि इसे नियंत्रित न किया जाये तो यह तंत्रिका तंत्र कि कमजोरी, नजर कमजोर होना, किडनी को नुकसान और हृदय संबधी समस्याएं आदि को जन्म देती है ।

■■■■■■

मधुमेह के संभावित खतरे क्या हैं ?

ब्लड शुगर का नियमित उच्च स्तर हृदय सम्बन्धी समस्याओं, आँखों की रौशनी जाना, गैंगरीन, किडनी फेल होना, मस्तिष्क सम्बन्धी एवं यौन समस्याओं को पैदा करता है ।

इसीलिए मधुमेह को साइलेंट किलर भी कहा जाता है !

■■■■■■

इलेक्ट्रो होम्योपैथी कैसे काम करता है ?

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में उपस्थित विभिन्न पौधों के अर्क मधुमेह रोग के कारणों पर प्रहार करते हैं!

और बीटा सेल्स को पुनः उत्पन्न एवं सक्रिय करके इन्सुलिन के स्राव को नियमित करते हैं ।

यह कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करके इन्सुलिन के प्रभाव में वृद्धि भी करता है ।

परिणामस्वरूप इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियां मधुमेह में ब्लड-शुगर के स्तर को अत्यंत प्रभावी रूप से नियंत्रित करने में सक्षम है ।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी शरीर से विषैले तत्वों को हटाता है!

A3 हीमोग्लोबिन के स्तर को भी बढ़ाता है ।

इस प्रकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी समग्र रूप से शरीर के सभी अंगों पर कार्य करके शुगर को ऊर्जा के रूप में परिवर्तित करता है ।

■■■■■■

इलेक्ट्रो होम्योपैथी किस प्रकार अन्य दवाइयों और इलाज की पद्धतियों से भिन्न है ?

एलोपैथिक दवाएं मधुमेह से जुड़ी अन्य समस्याओं का निवारण नहीं करतीं हैं !

जैसे कि - मांसपेशियों में दर्द, कन्धों में दर्द, थकान, जलन, बार-बार पेशाब आना, गहरी नींद न आना और ज्यादा पैदल न चल पाना ।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियां इन समस्याओं का बहुत ही प्रभावी ढंग से निवारण करने में सक्षम है ।

■■■■■■

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियां मधुमेह के अतिरिक्त, क्या अन्य समस्याओं में भी उपयोगी है ?

जी हाँ ! यह रक्तचाप के नियंत्रण, थायराइड, माइग्रेन, सिरदर्द, मोटापा, और थकान के निवारण में सहायक सिद्ध हो सकता है ।

यह शरीर की प्रतिरक्षा-प्रणाली को भी मजबूत करता है ।

साथ ही यह गैस और एसिडिटी की समस्याओं को भी दूर करता है ।

■■■■■■

क्या इससे मधुमेह रोग होने को रोका जा सकता है ?

जी हाँ ! कोई भी स्वस्थ व्यक्ति भविष्य में भी मधुमेह रोग होने से रोकने के लिए भी इसका उपयोग कर सकता है ।

इसे किसी भी स्वस्थ व्यक्ति द्वारा एक स्वास्थ वर्धक के रूप में भी लिया जा सकता है ।

■■■■■■

क्या इसका उपयोग अन्य एलोपैथिक दवाओं के सेवन के साथ भी किया जा सकता है ?

जी हाँ ! इसका सेवन अन्य एलोपैथिक दवाओं के साथ भी किया जा सकता है ।

■■■■■■क्या वैज्ञानिकों द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी में प्रयुक्त जड़ी-बूटियों के प्रभाव के सम्बन्ध में की गयी रिसर्च प्रामाणिक है ?

जी हाँ !

भारत सरकार द्वारा संचालित रिसर्च द्वारा भी इन इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लाभदायक प्रभाव प्रमाणित हैं ।

■■■■■■

मधुमेह में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के औषधि उपयोग से कितने दिनों में हम लाभ का अनुभव करेंगे ?

यह हर व्यक्ति के सन्दर्भ में भिन्न हो सकता है ।

पर एक महीने में हमें इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से अनुभव होने लगेगा ।

■■■■■■

क्या इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधि का कोई दुष्प्रभाव भी हैं ?

बिलकुल नहीं ! यह पूरी तरह वनस्पतियों की जैव -विद्युत ऊर्जा पर आधारित चिकित्सा औषधि है ।

और इसके कोई भी दुष्प्रभाव नहीं हैं ।

हम मधुमेह के प्रति जागरूकता लाने और सभी मधुमेह रोगियों को मधुमेह-मुक्त स्वस्थ जीवन जीने की प्रेरणा देने के लिए समर्पित हैं ।

■■■■■■

मधुमेह रोग के कारण :

1. इंसुलिनजनि

(टाइप -1)

पैनक्रियाज के बीटा सेल्स के द्वारा इंसुलिन के स्राव का कम या समाप्त हो जाना !

2. इंसुलिनोट्रोपिक:

(टाइप -2)

इन्सुलिन का ब्लड शुगर / ग्लूकोस के साथ प्रतिकिया करना बंद कर देना ।

इसका मुख्य कारण हो सकता है - कोशिकाओं का इन्सुलिन के प्रति असंवेदनशील हो जाना या कोलेस्ट्रॉल का अधिक बढ़ जाना, या दोनों ।

ये समग्र रूप से शरीर के सभी अंगों पर कार्य करके शुगर को ऊर्जा के रूप में परिवर्तित करता है :

1. यह बीटा सेल्स को पुनः उत्पन्न एवं सक्रिय करके इन्सुलिन के स्राव को ठीक करता है ।

2. यह कोशिकाओं कि क्षति को भी ठीक करता है और कोलेस्ट्रॉल को घटाता है ताकि कोशिकाएं पुनः इन्सुलिन के साथ प्रतिक्रिया प्रारम्भ कर दें ।

3. यह हीमोग्लोबिन के स्तर को बढ़ाता है और ताकि ऑक्सीजन का हमारे सेल्स में अवशोषण बढ़ सके, यह प्रक्रिया भी शुगर को ऊर्जा में परिवर्तित करने की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण रोल निभाती है ।

4. इलेक्ट्रो होम्योपैथी मानव शरीर से विषैले तत्वों को भी निकाल बाहर करता है ।

मानव शरीर में ऊर्जा उत्पादन की प्रक्रिया को सुचारू बनाता है !

और मधुमेह के संभावित खतरों से बचाव करता है ।

इस प्रकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी आपको भविष्य में मधुमेह रोग होने से रोकने में भी सक्षम है ।

हालांकि हम सभी से अपील करते हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के उपयोग के साथ-साथ कुछ शारीरिक व्यायाम भी करें,

और अपनी खान-पान, आहार - विहार सम्बन्धी आदतों को नियंत्रित करें और पर्याप्त नींद लें ।

हम सभी मधुमेह के प्रति समाज में जागरूकता उत्पन्न करने और मधुमेह-मुक्त समाज बनाए के लिए संकल्प लें ।

डा.आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

■■■■■■

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की कोई भी दवा एक दूसरे से कभी ना मिलाये !

अलग अलग ही प्रयोग करें !

ये बेसिक ग्रूप हैं ,अगर हम कह दे ,की दो दवा एक साथ मिला दो ,तो बहुत लोग RE और YE को भी एक साथ मिला देंगे !

परिणाम शून्य होगा !

इसलिये अगर सही इलेक्ट्रो होम्योपैथी बताना हैं ,तो कुछ अपवाद तो रहेगा !

C2

कैँसोरोसो - 2

......

इस औषधि का प्रमुख प्रभाव C1 के समान ही हैं !

यदि रोग द्वितीय अवस्था में पहुँच गया हो ,तो C2 का प्रयोग करना चाहिये !

तब रोग आगे नही बढ़ पायेगा ! और रोग धीरे धीरे घटकर द्वितीय अवस्था से फ़िर प्रथम अवस्था में आ जायेगा , और फ़िर तब हमे C1 से चिकित्सा करनी चाहिये !

......

इस औषधि का पहला प्रभाव मूत्राशय से शुरू होता हैं !सबसे पहले यह दवा मूत्राशय पर काम कार्य करती हैं ! उसके बाद   मूत्र मार्ग , मूत्र नली तथा अन्त में वृक्क (किडनी) पर प्रभाव डालती हैं !

अर्थात ये मूत्राशय से शुरू होकर किडनी तक फैले समस्त (मूत्र तन्त्र) रोग की प्रमुख दवा हैं !

जब कि C6 ये ही कार्य किडनी से शुरू कर नीचे मूत्राशय तक करती जाती हैं !

टिश्यू के द्वितीय अवस्था की खराबी में इस दवा का प्रयोग करना चाहिये !

यह औषधि लीवर कैंसर & पित्ताशय की पथरी को गला कर ख़त्म कर देती हैं !

......

पेशाब रुकने पर 1st dialution जल्दी जल्दी देना चाहिये ! & बहूमूत्रता में नगेटिव डाल्युशन बार बार देना चाहिये !

इस औषधि का द्वितीय प्रभाव पहले पित्ताशय पर हैं ! तथा बाद में लीवर एवं आँतों की ग्रंथियों ,स्लैस्मिक कलाओं ,वात सूत्रों इत्यादि पर हैं !

जिसके परिणाम स्वरूप इस औषधि के प्रयोग से पित्ताशय & यकृत के सभी रोग नष्ट हो जाते हैं !

......

डा.आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

C3

कैँसोरोसो 3

▪▪▪▪▪▪

इस औषधि का प्रभाव त्वचा , त्वचा की ग्रंथियां ,त्वचा के नीचे रहने वाले सेलो एवं वात सूत्रों , हड्डियों की स्लैस्मिक कलाओं ,आँतों एवं ग्रंथियों आदि पर मुख्य प्रभाव है !

यह औषधि वात सूत्रों के सड़न - गलन ,गहरे घाव ,गुमड , तेजाब से जल जाना , पाला मार जाना ,आँतों में फोड़ा एवं कैंसर , पुराना दस्त (कोल्ड डायरिया)

एवं संग्रहणी ,सूखा रोग ,टी.बी.,कण्ठ माला ,

चेहरे की बतौडी , त्वचा का कैंसर इत्यादि समस्याओं को तत्काल नष्ट करती है !

यानी टिश्यू की तृतीय अवस्था में माँस पेशियों के सड़ने - गलने पर प्रयोग की जाती है !

पेशिये ऊतक या मसल्स टिश्यू की खराबी को ठीक करने की सबसे प्रभावी औषधि है !

त्वचा के नीचे तीसरे परत के शलेस्मिक कलाओं पर तुरन्त प्रभावी है !

दाद , इक्झीमा ,सौरायासिस ,

डरमायटिस ,चमड़ी कड़ा व मोटा होने पर , मवाद युक्त फुंसियाँ , आकौता चकत्ते ,खुजली वाले दानों की असर कारी दवा है !

यह औषधि सॉफ़्ट बोन को लक्षय करके बनायी गई है !

घेघा , हड्डियों का बढ़ जाना , मूत्राशय का लकवा ,पेशाब रुक रुक कर होना ,लिंग की कमजोरी , इत्यादि में अत्यन्त प्रभाव कारी औषधि है !

▪▪▪▪▪▪

Cansoroso 4

सी 4

▪▪▪▪▪▪

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में ये औषधि अस्थि ऊतक या बोन टिश्यू की खराबी को ठीक करने वाली प्रमुख औषधि है ।

▪▪▪▪▪▪

C ग्रुप की ये चौथी औषधि हड्डियों से संबंधित किसी भी प्रकार की सभी समस्याओं की प्रमुख औषधि है ।

जब रोग चौथी अवस्था मे पहुँच कर हड्डियों को प्रभावित कर रहे हों ।

रोग सम्पूर्ण शरीर के समस्त अंग तन्त्र सेलों एवं सूत्रों में फैल गया हो ।

तब C4 का प्रयोग करना चाहिए ।

......

हड्डी एक प्रकार से कनेक्टिव टिश्यू है , जो कठोर पदार्थ से निर्मित है ।इस औषधि का प्रभाव सजीव (आंतरिक) हड्डियों पर है ।

हड्डियां पर कैल्शियम एवं फास्फोरस कार्बोनेट के जमा होने पर हड्डियां मज़बूत एवं कठोर हो जाती हैं , ये कैल्शियम हड्डियो को रक्त के माध्यम से प्राप्त होती है ।

और रक्त में कैल्शियम का नियंत्रण पैराथर्मोन से होता है । पैराथर्मोन & कैल्सिटोनिन का स्त्राव पैराथाईराइड एवं थायराइड नामक ग्रंथियों से होता है ।

इन ग्रंथियों पर सी4 का जबरदस्त प्रभाव है ।

तो थायरॉइड के रोग में सी4 का प्रयोग करना चाहिए ।

......

जोड़ो में जमा यूरिक एसिड के जमाव को पिघला कर मूत्र मार्ग द्वारा बाहर निकालने के लिए सी4 के प्रथम डाल्यूशन का प्रयोग किया जाता है ।

साथ मे S5,C17,सी6 ,S6 आवस्यकता अनुसार प्रयोग करना अनिवार्य है ।

......

ये औषधि दांतों एवं मसूड़ो में उत्त्पन्न किसी भी प्रकार के रोगों को नष्ट करने में समर्थ है ।

......

इस औषधि का प्राकृतिक गुण हड्डी रोग नाशक ,कैंसर नाशक , हड्डियों को जोड़ने वाली , हड्डियों के सूजन को मिटाने वाली , हड्डियों पर जमे कैल्शियम एवं फास्फोरस को संतुलित करने वाली ,यूरिक एसिड को निकालने वाली ह्रदय रोग से बचाने वाली जीवन दायनी औषधि है ।

यह पत्थर जैसे कठोर गांठ को गलाती है ।गांठो पर जमे यूरिक एसिड हटाने वाली ,बढ़े हुए हड्डियों के ऊभार को गलाकर खत्म कर देती है ।

हड्डियों के नासूर एवं हड्डियों के गलने सड़ने को समाप्त कर देती है ।

मज़्ज़ा से शुरू हुए रोग हड्डियों तक फैल जाने पर सी 5 के बाद C 4 का प्रयोग करें ।

Cansoroso 5

C 5

.....

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में यह औषधि कैंसोरोसो ग्रुप की 1,2,3,4 में लिखी गई , समस्त रोगों के अन्तिम अवस्था मे पहुँच जाने पर C5 का प्रयोग किया जाता है।

हड्डियों के अन्दर मज़्ज़ा में उत्पन्न विकार एवं त्वचा के रोगों की प्रमुख दवा है ।

प्रत्येक रोग को ठीक करने के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियाँ 2 मार्ग अपनाती हैं।

1- हार्मोन का माध्यम

2- तन्त्रिका तन्त्र का माध्यम

तो ये औषधि तन्त्रिका तन्त्र के माध्यम से तत्काल प्रभाव डालकर रोगों को नष्ट कर देती है ।

कभी कभी लगता है कि C5 अकेले ही सम्पूर्ण शरीर पर प्रभाव करने वाली औषधि है ,

लेकिन ऐसा नही है । क्योंकि यह औषधि शरीर के अंगों पर तब कार्य करती है जब अंगों की बनावट में विकृति हो गई हो । तब सी 5 का ही प्रयोग किया जाता है ।

इसका प्रयोग आन्तरिक एवं वाह्य दोनों प्रकार से किया जाता है ।

......

रक्त परिसंचरण तन्त्र पर इस औषधि का प्रभाव होने के कारण हृदय ,शिराओं, धमनियों के कोशिकाओं के बिगड़े हुये प्रक्रिया को ठीक कर देती है ।

......

त्वचा से संबंध रखने वाले प्रत्येक अन्तरीय एवं वाह्य रोगों में प्रयोग किया जाता है ।

तर खुजली, जननांगों की खराबी, फ़ालिज ,कुष्ठ रोग ,चर्म रोग , दाद, अकौता , अपरस , गठिया , सायटिका ,गर्भाशय से संबंधित रोग ,नाक ,कान मुँह आँत एवं मलाशय से संबंधित अनेको रोगों में प्रयोग किया जाता है ।

विशेष : पथरी को गलाने के लिए या नेफ्राइटिस को समाप्त करने के लिये सी5 का प्रयोग किया जाता है ।

पथरी समाप्त होने के बाद इस औषधि के तीव्र नेगेटिव डोज़ देने पर पथरी दोबारा नही बनती ।

डॉ. आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

9935656181

Cansoroso 10

C10

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में C10   कैंसोरोसो श्रेणी की दसवीं औषधि है ।

यह लिवर एवं लिवर के कारण शरीर के किसी भी जगह उत्पन्न समस्या को समाप्त करती है ।

......

पित्त प्रकृति वालों में अत्यंत प्रभावशाली औषधि है ।

गैस बनने एवं पित्त का रक्त में मिलकर बेचैनी एवं सिर दर्द आदि परेशानी को नेगेटिव डोज़ से तुरंत खत्म किया जाता है ।

......

लिवर यानी यकृत छाती के दाएं होता है ।

यकृत में रक्त ,रस,एवं नर्व आदि में समस्या हो जाने पर C10 का प्रयोग करना चाहिए ।

यकृत एवं किडनी का एक दूसरे का गहरा सम्बन्ध है ।

यकृत रोग के कारण उत्पन्न किडनी की खराबी में भी यह औषधि अच्छा कार्य करती है ।

.....

इस प्रकार इस दवा का प्रभाव यकृत ,किड़नी ,रक्त परिसंचरण ,जनन तन्त्र & पाचन तन्त्र के ऊतकों पर है ।

अतः इन अंगों में यकृत में तंत्रिका तन्त्र के कारण किसी भी रोग में C10 हमेशा याद रखें।

......

यकृत, प्लीहा एवं पित्ताशय के सूजन में या बढ़ जाने पर , लीवर में फोड़ा एवं कैंसर , पीलिया के रोग को समाप्त करने के लिए सी 10 का प्रयोग करना चाहिए ।

यकृत के पुराने रोग में पित्ताशय की पथरी में पित्त की अधिकता के परिणाम स्वरूप हरे रंग की खट्टी ,पीली ,तिक्त, उल्टी होने पर , लिवर के बढ़ जाने पर , लिवर की खराबी आदि में ये दवा राम बाण काम करती है ।

डॉ. आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

9935656181

C 13

कैंसोरोसो 13

......

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में ये औषधि डांफिन के नाम से भी जानी जाती है।

ये औषधि प्रत्येक प्रकृति वाले व्यक्तियों में प्रयोग की जा सकती है ।

इसका मुख्य प्रभाव नाक ,गला ,आमाशय एवं आंतों पर है ।

रक्त कैंसर एवं डिप्थीरिया रोग की महा औषधि है ।

.....

दूषित रक्त होने के कारण शरीर नीला पड़ने लगे ,

तीव्र ज्वर होने पर रोगी के बेहोश होने पर ,मल मूत्र अपने आप होने पर

अथवा

तुतली बोली को ठीक करने के लिये ये सर्व श्रेष्ठ औषधि है ।

.....

ये औषधि पाचन तन्त्र ,श्वसन तन्त्र ,मूत्र तन्त्र ,& जनन तन्त्र तथा तन्त्रिका तन्त्र की प्रभावी दवा है।

ये औषधि रक्त कैंसर में रक्त के विषैले तत्वों को नष्ट कर सभी प्रकार के कैंसर में उपयोगी है ।

......

भोजन में ग्रहण किये गए अनेक तत्वों का अवशोषण पाचन तन्त्र द्वारा होता है ।

जिसके परिणामस्वरूप शरीर को शक्ति एवं रस & रक्त मिलता है ।

शेष बचें पदार्थों का उत्सर्जन अनेकों अंगो द्वारा होता है ।

तो ये दवा खाने पीने से लेकर पदार्थों के उत्सर्जन तक को संतुलित करने का काम करती है ।

......

ये औषधि कैंसर नाशक ,रस - रक्त शोधक ,ग्रंथियों में रोग नाशक ,पाचक ,पेचिस नाशक ,हृदय ,फेफड़ा रोग नाशक ,टॉन्सिल नाशक इत्यादि की प्रभाव शाली औषधि है ।

.....

डॉ. आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

9935656181

Cansoroso 6

सी 6

.....

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में इस औषधि का पहला प्रभाव किडनी के सेलों एवं सूत्रों पर है ।

फिर दूसरा प्रभाव कमश: मूत्र प्रणाली ,मूत्राशय एवं मूत्र मार्ग पर है ।

अतः इन अंगों में उत्पन्न सेलों & सूत्रों की बर्बादी को ये औषधि ठीक करती है ।

......

ये औषधि ऊपरी उत्सर्जन तन्त्र की प्रमुख औषधि है ।

उत्सर्जन अंग तन्त्र में कैंसर , फोड़ा ,फुन्सी ,

गांठ ,गूमड़ ,पथरी सूजन ,जलन , दर्द व

प्रदाह की बहुत ही प्रभाव कारी औषधि है ।

......

मूत्र तन्त्र में ऊतकीय परिवर्तन होने के कारण उत्सर्जन तन्त्र का अनियंत्रित एवं असंतुलित होना स्वभाविक है ।

अतः उत्सर्जन तन्त्र से संबंधित बनावट को ठीक करने के लिए सी6 सटीक औषधि है ।

......

आज के भाग दौड़ की जीवन शैली में फ़ास्ट फ़ूड का सबसे बुरा प्रभाव उत्सर्जन तन्त्र पर ही पड़ता है ।

मूत्र तन्त्र के के रोग केवल मूत्र तन्त्रों तक ही सीमित नही होते ।

अपितु शरीर के अन्य अंगों के साथ साथ रक्त एवं रस को भी दूषित कर देते हैं ।

तब ये औषधि रक्त एवं रस में भ्रमण कर रहे विषैले पदार्थों को बाहर निकालती है ।

......

इस औषधि का postive डोज़ पथरी के कारण बंद मूत्र को निकालने में उपयोगी है ।

तथा nagetive डोज़ मूत्र में एल्बुमिन आने से रोकती है ।

किडनी की पथरी ,किडनी की सूजन , मूत्र में ख़ून का आना , दर्द , निर्बल स्त्रियों में कष्टार्तव ,यूरिक एसिड इत्यादि रोगों में अत्यंत प्रभाव कारी औषधि है ।

डॉ. आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

9935656181

Cansoroso 10

C10

......

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में C10 कैंसोरोसो श्रेणी की दसवीं औषधि है ।

यह लिवर एवं लिवर के कारण शरीर के किसी भी जगह उत्पन्न समस्या को समाप्त करती है ।

......

पित्त प्रकृति वालों में अत्यंत प्रभावशाली औषधि है ।

गैस बनने एवं पित्त का रक्त में मिलकर बेचैनी एवं सिर दर्द आदि परेशानी को नेगेटिव डोज़ से तुरंत खत्म किया जाता है ।

......

लिवर यानी यकृत छाती के दाएं होता है ।

यकृत में रक्त ,रस,एवं नर्व आदि में समस्या हो जाने पर C10 का प्रयोग करना चाहिए ।

यकृत एवं किडनी का एक दूसरे का गहरा सम्बन्ध है ।

यकृत रोग के कारण उत्पन्न किडनी की खराबी में भी यह औषधि अच्छा कार्य करती है ।

.....

इस प्रकार इस दवा का प्रभाव यकृत ,किड़नी ,रक्त परिसंचरण ,जनन तन्त्र & पाचन तन्त्र के ऊतकों पर है ।

अतः इन अंगों में यकृत में तंत्रिका तन्त्र के कारण किसी भी रोग में C10 हमेशा याद रखें।

......

यकृत, प्लीहा एवं पित्ताशय के सूजन में या बढ़ जाने पर , लीवर में फोड़ा एवं कैंसर , पीलिया के रोग को समाप्त करने के लिए सी 10 का प्रयोग करना चाहिए ।

यकृत के पुराने रोग में पित्ताशय की पथरी में पित्त की अधिकता के परिणाम स्वरूप हरे रंग की खट्टी ,पीली ,तिक्त, उल्टी होने पर , लिवर के बढ़ जाने पर , लिवर की खराबी आदि में ये दवा राम बाण काम करती है ।

......

🙏🏻🙏🏻🙏🏻🙏🏻🙏🏻

डॉ. आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

9935656181

C 13

कैंसोरोसो 13

......

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में ये औषधि डांफिन के नाम से भी जानी जाती है।

ये औषधि प्रत्येक प्रकृति वाले व्यक्तियों में प्रयोग की जा सकती है ।

इसका मुख्य प्रभाव नाक ,गला ,आमाशय एवं आंतों पर है ।

रक्त कैंसर एवं डिप्थीरिया रोग की महा औषधि है ।

.....

दूषित रक्त होने के कारण शरीर नीला पड़ने लगे ,

तीव्र ज्वर होने पर रोगी के बेहोश होने पर ,मल मूत्र अपने आप होने पर

अथवा

तुतली बोली को ठीक करने के लिये ये सर्व श्रेष्ठ औषधि है ।

.....

ये औषधि पाचन तन्त्र ,श्वसन तन्त्र ,मूत्र तन्त्र ,& जनन तन्त्र तथा तन्त्रिका तन्त्र की प्रभावी दवा है।

ये औषधि रक्त कैंसर में रक्त के विषैले तत्वों को नष्ट कर सभी प्रकार के कैंसर में उपयोगी है ।

......

भोजन में ग्रहण किये गए अनेक तत्वों का अवशोषण पाचन तन्त्र द्वारा होता है ।

जिसके परिणामस्वरूप शरीर को शक्ति एवं रस & रक्त मिलता है ।

शेष बचें पदार्थों का उत्सर्जन अनेकों अंगो द्वारा होता है ।

तो ये दवा खाने पीने से लेकर पदार्थों के उत्सर्जन तक को संतुलित करने का काम करती है ।

......

ये औषधि कैंसर नाशक ,रस - रक्त शोधक ,ग्रंथियों में रोग नाशक ,पाचक ,पेचिस नाशक ,हृदय ,फेफड़ा रोग नाशक ,टॉन्सिल नाशक इत्यादि की प्रभाव शाली औषधि है ।

....

डॉ. आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

9935656181

कैंसोरोसो 15

C15

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में यह औषधि आमाशय के प्रत्येक ऊतकीय रोगों को जड़मूल से नष्ट कर देती ही है।

आमाशय में उत्पन्न रोगों से शैलेस्मिक कलाओं के सेलों ,रक्त संचार ,तंत्रिकाओं प्रभाव होने के कारण आमाशय के समस्त रोगों की सबसे प्रभाव शाली औषधि है ।

अमाशय का कैंसर ,गूमड़ ,फोड़ा ,सड़न-गलन , अल्सर सख्त या नरम , फैल जाना या सिकुड़ जाना ,दर्द , आमाश्य में जलन ,अन्न नली का सृजन एवं अमाशय की ग्रंथियों से निकलने वाले पाचक रस पर इस औषधि का बहुत अच्छा प्रभाव है ।

.....

इस औषधि का दूसरा प्रभाव आँतो एवं मेरुरज्जु के ऊतकों पर भी है ।

नाभी एवं आँतो पर प्रभाव होने के कारण हार्निया की उत्तम औषधि है ।

मेरुरज्जु के छय होने के कारण पेशियों में निष्क्रियता ,आघात,

मोटर नर्व की अच्छी दवा है ।

आमाश्य एवं आँत रोग की प्रमुख औषधि है ।

......

इस का postive dose पाचनतन्त्र के सभी रोगों में दिया जाता है ।

Nagetive dose हार्निया ,सिफलिस आदि को ठीक करती है ।

ये उपान्त्र एवं आंत्रपुच्छ की औषधि है ।

डॉ. आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

9935656181

कैंसोरोसो 17

C 17

......

वनस्पतियों से उत्पत्ति हुई मूत्र तंत्र पर इस औषधि का विशेष प्रभाव है

प्रत्येक आयु के स्त्री पुरुष एवं बच्चों में प्रयोग की जाने वाली इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति के सी 17 बहुत ही प्रभावकारी टिश्यू मेडिसिन मानी जाती है ।

C17 औषधि सी.टी.वी के नाम से भी जानी जाती है। पीयूष ग्रंथि एड्रीनल ग्रंथि एवं अग्राशय आदि पर विशेष प्रभाव होने के कारण इन अंगों में या इससे संबंधित रोगों को यह औषधि जड़ मूल से अस्थाई तौर पर समाप्त कर देती है।

......

शरीर में रासायनिक ऊर्जा का प्रमुख स्रोत कार्बोहाइड्रेट युक्त भोजन में जटिल मांड एवं शर्करा है ।

जो पाचन के फलस्वरुप ग्लूकोज मैनोज़ एवं गलैक्टोज़ में विभाजित होकर रुधिर में अवशोषित हो जाता है ।

यह अवशोषित पदार्थ हिपेटिक पोर्टल द्वारा यकृत में पहुंचता है ।

यकृत कोशिकाएं फ़ैक्टओज ,मैनोज़ एवं गलैक्टोज़ को रक्त से लेकर ग्लूकोज में बदल देती है ।

रक्त में ग्लूकोज का संवहन प्रमुख रूप से होता है।

......

कार्बोहाइड्रेट के पाचन से लेकर नियमन तक उत्पन्न परेशानियां सी-17 के अंतर्गत आती है ।

जब के कारण बस माण्ड एवं शर्करा का पाचन एवं अवशोषण रक्त में नहीं हो पाता है ।

तब इस औषधि का धनात्मक डोज़ अन्य सहायक औषधियों के साथ प्रयोग करना चाहिए।

हिपेटिक पोर्टल बेन में उत्पन्न खराबी के कारण रक्त की औषधि A3 के साथ सी-17 का प्रयोग करना चाहिए।

रुधिर में ग्लूकोज़ की मात्रा यकृत की कोशिकाओं के अनियंत्रित होने के फलस्वरुप घटने बढ़ने पर या सहायक औषधियां के साथ से 17 का प्रयोग करना चाहिए।

......

C17 का आंशिक प्रभाव थायराइड ग्रंथि पर है ।

इस ग्रंथि में उत्पन्न पैरा थर्मोन के स्राव से या औषधि को नियंत्रित करती है ।

जिसके फलस्वरुप पेशाब की मात्रा अधिक ,भूख न लगना, प्यास अधिक लगना , कब्ज , सिर दर्द आदि को ठीक करती है।

पेशाब की पथरी बनने से रोकती है ।

एक बार रोग ठीक होने के बाद दोबारा नहीं होता।

औषधि का अतिरिक्त प्रमुख प्रभाव एड्रिनल ग्रंथि पर है ।

जिसका नियंत्रण पीयूष ग्रंथि से होता है पियूष ग्रंथि , एड्रिनल ग्रंथि एवं हाइपो थैलमस का आपस में गहरा संबंध है इसके प्रमुख औषधि C17 है।

एड्रीनल में स्त्राव की अनियमितताओं को यह औषधि अपने सहायक औषधियों के साथ नियंत्रित करती है ।

जिससे रक्त दाब कम, रक्त में शर्करा की कमी , यकृत एवं मस्तिष्क की पेशियों की शारीरिक कमजोरी इत्यादि को ठीक कर देती है।

......

इस औषधि का एक स्थाई प्रभाव अग्नाशय नामक वाह्य स्त्रावी एवं अंतः स्त्रावी ग्रंथि पर है।

इसके अंतः स्त्रावी ग्रंथि से इंसुलिन एवं ग्लूकोन नामक हार्मोन स्त्रावित होता है ।

जो कि शरीर में कार्बोहाइड्रेट मेटाबॉलिक का पूर्ण नियंत्रक है शरीर की सारी कोशिकाओं के ग्लूकोज के लिए पारगम्यता को बढ़ा देती है।

जिसके फलस्वरुप कोशिकाएं रक्त से अधिक ग्लूकोज़ लेकर उपयोग करने लगती हैं ।

इंसुलिन के अल्प स्त्रावण से शरीर की कोशिकाएं रक्त में संचरित ग्लूकोज़ को ले नहीं पाती है ।

जिससे ग्लूकोस की अधिक मात्रा होने पर मूत्र के साथ उत्सर्जित होने लगता है ।
जिसे मधुमेह कहते हैं।

......

मधुमेह नामक बीमारी को दूर करने के लिए इंसुलिन का स्त्रावण बढ़ाना होगा तथा रक्त में ग्लूकोज की मात्रा कम करनी होगी।

इसके लिए सी 17 का धनात्मक खुराक देना चाहिए । और साथ ही सहायक औषधियां भी देनी पड़ती है ।

इस रोग में जब रोगी बेहोशी की स्थिति में जाने लगे तो C17 के साथ S1 देने पर तत्काल लाभ मिलता है ।

इसके विपरीत इंसुलिन के स्त्रावण से रुधिर में ग्लूकोज की मात्रा कम होने लगती है ।
तथा ग्लूकोन स्त्रावित होने लगता है ।

जिसके फलस्वरुप तंत्रिका कोशिकाओं में ग्लूकोस की आवश्यकता पूर्ति नहीं हो पाती ।

तथा नेत्रों की रेटिना एवं जनन तंत्र की इपिथिलीयम ऊतक की कोशिकाओं में ऊर्जा हेतु ग्लूकोस नहीं प्राप्त होता।
जिससे मधुमेह नामक रोग खत्म हो जाता है ।
दृष्टि ज्ञान एवं प्रजनन क्षमता कम हो जाती है मस्तिष्क कोशिकाओं में अत्यंत उत्तेजना के साथ थकावट मोर्चा एवं होने लगता है ।
जिसकी सर्वश्रेष्ठ दवा
C 17 तथा S1 का नेगेटिव डोज़ है।
पैंक्रियाज का बाहरी स्त्रावी ग्रंथि अनेकों पाचक इंज़ाइमो का स्त्रावण करती है ।
ग्रंथि के अनियंत्रित तथा असंतुलित हो जाने पर यह औषधि सामान्य स्थिति प्रदान करती है ।
यह औषधि का पहला प्रभाव मूत्राशय एवं मूत्र प्रणाली प्रभाव पर है।

......

इस प्रकार यह औषधि दो माध्यमों से कार्य करती है।

पहला हार्मोन

दूसरा तंत्रिका तंत्र

औषधि के कार्य करने का प्रमुख पहला माध्यम हार्मोन है ।

तथा दूसरा एवं सहायक माध्यम तंत्रिका तंत्र है ।

यह औषधि हार्मोन को संतुलित एवं नियंत्रित कर शरीर को संपूर्ण स्वस्थ रखती है ।

इन ग्रंथियों में से किसी भी प्रकार की परेशानियां यदि लिंफेटिक चैनल से उत्पन्न हो रही हो,

तो S ग्रुप की सहायक औषधि के साथ सी-17 के औषधी देनी चाहिए ।

......

किसी भी रोग को दूर करने के लिए कारण का निवारण अनिवार्य है ।

वरना परेशानियां दूर हो जाएंगे , परंतु पुनः रोग वापस आ जाएगा ।

ध्यान रहे आपका अनुभव औषधि का सही चुनाव रोगी को राहत देगा ।

डायबिटीज (मधुमेह) असाध्य रोग नहीं है ,

इसका धैर्य से इलाज करें।

डायबिटीज से उत्पन्न परेशानियां मात्र C 17 से एवं उसकी सहायक औषधियों से दूर हो की जा सकती हैं ।

जिसका नियमानुसार प्रयोग करना चाहिए।

......

C17 postive डोज़ अग्नाशय की निष्क्रियता, रक्त एवं पेशाब में शर्करा का जाना ,

अग्नाशय के खराब होने से उत्पन्न परेशानियों को दूर करती है।

किडनी के हिस्सों में उत्पन्न खराबी को जड़ मूल से नष्ट कर देती है।

डॉ. आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

9935656181

वेनेरियो - 1

Ven

......

जैसा कि इसके नामं से स्पष्ट है ।

कि यह औषधि वेनेरियल डिजीज को जड़ से नष्ट कर देती है ।

इस औषधि का दूसरा नाम कांस्टीट्यूशनल औषधि है।

यह औषधि शरीर के भौतिक या प्राकृतिक बनावट या इसके कार्य के ढंग मेटाबोलिक प्रोसेस की पूर्ति, प्रतिक्रियाओं की उत्तेजना हेतु तरीका एवं पैथोजेनिक आर्गैनिज़्म के रोकने की दवा है।

प्रत्येक प्रकृति वाले व्यक्तियों के अनुकूल है।

इस औषधि का प्रभाव ग्रंथियों, लसिका संस्थान, रक्त संस्थान , ऊतकों , मांस पेशियों आदि पर होने के कारण ये औषधि

S ग्रुप , C ग्रुप & A ग्रुप की भाँति कार्य करती है।

S1 की तरह ही इस औषधि का प्रभाव यूनिवर्सल है , शर्त सिर्फ यह है कि रोग वेनेरियल कारणों से उत्पन्न हुआ हो ,

यह दवा एक एंटीसेप्टिक भी है ।

......

S1के बाद ये इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सर्वश्रेष्ठ दवा मानी जाती है ।

जो लगभग 80% लोगों को नष्ट करने की शक्ति रखती है।

टिश्यू / ऊतकों पर प्रभाव होने के कारण कैंसर में कैंसर ओशो श्रेणी की औषधियों के सहायक औषधि मानी जाती है

ग्रंथियों की शैलेस्मिक कलाओं एवं लसिका पर प्रभाव होने के कारण

S ग्रुप की दवाओं के सहायक औषधि है ।

रक्त एवं रक्त परिसंचरण तंत्र पर प्रभावी होने के फलस्वरुप A श्रेणी की औषधियों के सहायक है।

यदि इस औषधि की 5 गोली प्रतिदिन ली जाए तो, सुजाक एवं उपदंश जैसे रोग से सुरक्षा करती है।

विनेरियल रोग की शंका हो गई हो ,

तो नेगेटिव डोज़ का प्रयोग करना चाहिए।

यह औषधि संपूर्ण शरीर पर प्रभाव रखती है ।ग्रंथियों एवं शैलेस्मिक कलाओं पर विशेष प्रभाव होने के कारण चयापचय की कार्यविधि पूरा होने में सहयोग करती है।

जीर्ण रोगों में जिसका कारण कृमि के अतिरिक्त वायरस है। शरीर को दुबला बना देती है ऐसी स्थिति में ver 1की तरह ven 1 काम करती है।

......

इस पैथी में जननेंद्रियों पर कार्य करने वाली सर्वश्रेष्ठ औषधि C1 है ,

जननेन्द्रियों पर सबसे अधिक प्रभाव रखने वाली वेनेरियों एकमात्र औषधि है ।

जननेंद्रियों में योनि, गर्भाशय , डिंब , डिंब प्रणाली , भग , प्रोस्टेट अंडकोष , मूत्रमार्ग की ग्रंथियां एवं शैलेस्मिक कलाओं पर विशेष प्रभाव है।

......

कुछ ऐसे रोग जो पहले स्थानीय मालूम पड़ते हैं। लेकिन धीरे-धीरे संपूर्ण शरीर के सूत्रों ग्रंथियों एवं तरल में रक्त एवं लसीका द्वारा अपना विष पूरे शरीर में फैला देते हैं ।

जिस के कारण शरीर के प्रत्येक शैलेस्मिक कलाओं ग्रंथियों , मुंह, जीभ जननेंद्रियों, हलक , आंख नाक इत्यादि ग्रंथियों अंडकोष एवं आँतो ग्रंथियां , मांस पेशियों, सूत्रों , त्वचा , हड्डी , तरुण अस्थि , तंत्रिका तंत्र एवं मस्तिष्क आदि में ट्यूमर, नासूर, हड्डी का गलना, उभार , घाव , नामर्दी , बांझपन , स्पर्म एवं ओवम का मरना , टी० बी ०,

कैंसर इत्यादि भयंकर रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

जिनमें विरोधियों के साथ इसकी सहायक औषधियां प्रयोग किया जाता है।

......

वेनेरियल डिजीज छूत का रोग है । जो एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचता रहता है ।

मनुष्य के मरने के बाद विरासत के रूप में मां बाप से बच्चों , नाती-पोतों तक रूप बदलकर भगंदर नाकड़ा, दमा , कंठमाला रिकेट्स , अकौता , गठिया इत्यादि के रूप में सामने आता है ।

ये वेनेरियल डिजीज अन्य माध्यम की अपेक्षा सेक्स प्रसंग यानी सेक्स से ज्यादा फैलता है।

......

आज कल बाजार में कुछ ऐसे तत्व का प्रचलन बहुत जोरों पर है । जिस के प्रयोग से रोग दबकर असाध्य हो जाता है ।

तथा जिंदगी भर किसी न किसी रूप में परेशानियां देता रहता है ।

इन तत्वों का प्रयोग उपदंश एवं सुजाक में इंजेक्शन के रूप में किया जाता है ।

जब कि अकौता एवं मरकरी का प्रयोग मल्हम के रूप में प्रयोग करके तत्काल आराम देते हैं। जिससे रोग पुराना हो जाता है ।

......

कभी-कभी प्रोस्टेट ग्रंथि में प्रदाह /सूजन, वृक्क तथा मूत्राशय की रेजिस , अंडकोष में सूजन, मूत्रमार्ग की शैलेस्मिक कला में मांस का बढ़ जाना, जिससे मूत्र मार्ग सिकुड़ जाता है। सुजात जीर्ण रूप धारण कर मूत्राशय की प्रदाह से बढ़कर मूत्र मार्ग तथा किडनी में पैदा कर देता है ।

या सभी क्रियाएं कुछ ऐसे रासायनिक तत्वों के प्रयोग से होती है ।

जोकि सुजाक में तत्काल आराम करके रोक को दबा देती है।

......

कैंसर एवं उपदंश में पारे के प्रयोग भयंकर परिणाम देता है । शंका के कारण त्वचा रोगों में सुजाक का इलाज मरकरी से प्रारंभ कर देते हैं ।

त्वचीय दाने का इलाज मरकरी से बनी दवाओं से किया जाता है ।

दुष्परिणाम ये होता है कि शरीर में कुछ ऐसे लक्षण उभर आते हैं ।

जो कि उपदंश दूसरे या तीसरे दर्जे या पैतृक रोगों से मिलते-जुलते लगते हैं।

S1 के साथ इस औषधि को देने से मरकरी का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

ये औषधि वेन 1 प्राकृतिक रूप से सभी रोगों को नष्ट कर देती है।

......

सेक्सुअल ट्रांसमिटेड इंफेक्शन के तत्काल प्रभाव को नष्ट कर देती है।

त्वचा के नीचे छिपे दानों को उभार कर तथा पसीने के रूप में विष को बाहर कर देती है ।

मूत्रमार्ग में उत्पन्न घाव को ठीक कर देती है , सिफलिस एवं गोनोरिया के प्राइमरी स्टेज को ठीक कर देती है।

सिफलिस के प्राइमरी एवं सेकेंडरी स्टेज, कैंसर सिरदर्द , आइरेटिस , रेटिनाइटिस , एलोपेसिया गंजेपन, नेफ्रोटिक सिन्ड्रोम, मैनिंजाइटिस , नसों का फ़ालिज / लकवा, हड्डियों का गलना मूत्र मार्ग में मांस का बढ़ना, जोड़ों की शैलेस्मिक कला का प्रदाह , कंठमाला , पेशाब की पथरी , घाव ,चेचक का विष एवं बात को दूर करती है ।

......

जननांगों के रोग गर्भाशय, भग , गर्भाशय ग्रीवा आदि का कैंसर ट्यूमर रक्त एवं सफेद प्रदर , जननांग का फालिस , शिथिलिता बांझपन आदि में वेनेरियो प्रयोग किया जाता है।

......

कृपया सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी ग्रुप में पहुचाएं ।

धन्यवाद.....

डॉ. आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

9935656181

लिंफैटिको 1

L1

......

L ग्रुप रस एवं रक्त के बीच की औषधि है ।

रस रक्त दोनों पर लिंफेटिको को अपना प्रभाव रखती है

यह औषधि लिम्फ की औषधि मानी गई है।

लिंफैटिको लसिका ग्रंथियों , लसिका वाहिकाओं तथा लसिका की सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

अतः इसका मुख्य प्रभाव लसिका के सफेद कणों पर है । रक्त जब तक तैयार नहीं हो जाता ,

तब तक स्वेत लसिका परिवर्तन के काम आती है, जब रक्त शुद्धीकरण या ऑक्सीकरण हेतु श्वसन तंत्र में पहुंचता है । तो रक्त की लाल कण विद्युत शक्ति को ऑक्सीजन से लेकर रक्त में शोषण करते हैं ।

इस पर भी लिंफेटिक को का प्रभाव है । अतः यह औषधि रस एवं रक्त प्रवाह के विद्युत ऊर्जा पर भी प्रभाव रखती है । लसिका का संचालन एवं संगठन को नियंत्रित करती है।

......

चिकित्सा के दौरान लिंफेटिक चैनल हेतु तीन अशुद्धियां मानी जाती है।

1 - स्करोफ्लोसो

2 - लिंफेटिको

3- एन्ज़ियाटिको

क्योंकि लिंफेटिको का प्रभाव लिम्फ - रक्त पर पड़ता है ।

जबकि स्करोफ्लोसो का प्रभाव लिम्फ पर है ।

तथा एन्ज़ियाटिको का प्रभाव रक्त पर है ।

जबकि लिम्फाइटिको का प्रभाव रक्त एवं रस दोनों पर पूर्ण रूप से है।

......

स्करोफ्लोसो ग्रुप के औषधि का प्रभाव उन अंगों पर है । जो लसिका तैयार करते हैं ।

मेटाबोलिक के जो अंग लसिका को हृदय की ओर ले जाने वाली प्रणालियों में पहुंचाते हैं । इसका कार्य उस समय शुरु होता है , जब भोजन मुंह में प्रवेश करता है ।

और स्करोफ्लोसो का कार्य तब खत्म हो जाता है। जब लसिका बनकर तैयार हो जाती है ।

......

लिंफेटिको ग्रुप जब लसिका बनकर तैयार हो जाती है।

रक्त में ऑक्सीजन का शोषण हो जाता है ।

लसिका को वापस लाने वाली प्रणालियों और ग्रंथियों जो कि त्वचा के सूत्रों में पतली-पतली नलिका का जाल फैला हुआ है ।।

शरीर में आपूर्ति के कारणों से उत्पन्न सभी लिंफेटिक रोग एवं लिंक ग्रंथियों एवं संचार की उत्तम औषधि लिम्फाइटिको है।

......

एन्ज़ियाटिको :

रक्त के लाल कणों पर मुख्य प्रभाव रखती है। धमनियों के अंदर उपस्थित लाल कणो यानी आरबीसी पर अच्छा कार्य है।

......

लिम्फाइटिको का प्रभाव रक्त की बर्बादी के कारण रक्त की कमी, लसिका की बर्बादी के कारण रक्त का पतला पड़ जाना, लसिका की कमी,ग्रंथियों में बतौड़ी , ग्रंथियों में प्रदाह सूजन स्वेद ग्रंथियों की खराबी से खुजली, त्वचा पर दाने , नाकड़ा , टांसिल की ग्रंथियों में सूजन, शैलेस्मिक कलाओं का पक जाना , रक्त की कमी से अकौता, कान बहना, ग्रंथियों का बढ़ जाना, फोड़ा फुंसी , मुंह की शैलेस्मिक कला एवं मांस का बढ़ना , छाती की पीड़ा दमा , सिर दर्द , मासिक धर्म की कमी , त्वचा से भूसी उतरना , त्वचा में कुछ रेंगता हुआ मालूम पड़ना , दांत का नासूर , नपुंसकता , घेंघा रोग गठिया , पागलपन के दौरे स्मरण शक्ति की निर्मलता बच्चों में नस का रोग मांस पेशियों की निर्बलता हाथ पैर के तलवों में जलन, ज्यादा पसीना आना , प्रोस्टेट रस का बहना , दांत दर्द , सुजाक , मोटापा खून की कमी , खून का मवाद में मिल जाने इसके कारण खून का जहरीला हो जाना , मियादी ज्वर, प्रसूति ज्वर , सेप्टिक ज्वर सड़े-गले घाव , गैंग्रीन अपेंडिसाइटिस , कारबंकल , मैनिंजाइटिस, इंसेफेलाइटिस , डिप्थीरिया विषैले कीड़े मकोड़ों का काटना , टीकाकरण के बाद उत्पन्न रोग , खुजली इंफ्लुएंजा नई सर्दी , पुरानी सर्दी , बार बार जुकाम खांसी सुख ने की वजह की वजह से बार-बार छींक आना , डायबिटीज ,औरतों में पेशाब की खराबी एवं बेचैनी, हाथ एवं पैर का ठंडा रहना, प्यास ना लगना , कमजोरी , पीलिया पेशाब में जलन , मांस पेशियों में खिंचाव , तनाव नाड़ी का धीमा चलना इस पर मेट्रो रिया , रक्तस्राव इत्यादि अनेकों रोगों में लिम्फाइटिको का सफलतापूर्वक प्रयोग किया जाता है।।

......

लिम्फाइटिको का प्रथम डालूशन ग्रंथियों के कार्य को बढ़ा देती है ।

अतः ग्रंथियों के नेगेटिव रोगों में दिया जाता है ।

जैसे : दस्त फोड़े , वायुशुल , शारीरिक निर्बलता मांस पेशियों की बाई , पसीना रुकने की वजह से चर्म रोग , सूखी खुजली श्वेत रक्त की कमी ग्रंथियों में सूजन ट्रांसल आदि में प्रयोग किया जाता है।

......

तथा

ग्रंथियों के बढ़े हुए कार्य को कम करने के लिए नेगेटिव सोच दिया जाता है। जैसे प्रोस्टेट रस का बहना , बच्चों का लसिका रोग , ग्रंथियों में रक्त संचार एवं कड़ापन , जुडी बुखार सिरदर्द , मिर्गी , गर्भाशय में रक्त संचार , पागलपन का दौरा, मासिक धर्म की पीड़ा प्रोस्टेट ग्रंथि का बढ़ना, त्वचा पर दाने , लसिका स्त्राव, कमर दर्द बतौली बाई प्रदाह , मधुमेह गठिया ,एडिशन डिजीज ब्राइट डिजीज ,पेशाब में एल्ब्यूमिन का आना, गुर्दा एवं अंडकोष का नासूर बाल गिरना इत्यादि रोगों में नेगेटिव डोज़ दिया जाता है।

......

विषैले जानवरों का काटना, बाल झड़ने में प्रयोग किया जाता है ।

आग एसिड से जल जाना एवं छिल जाने पर भी लिम्फाइटिको का प्रयोग किया जाता है।

......

कुल मिलाकर लिम्फाइटिको

लसिका ग्रंथियों एवं लसीका वाहिकाओं तथा लसिका पर मुख्य प्रभाव रखने वाली प्रमुख इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधि है ।

यह हमें हमेशा याद रखना चाहिए ।

कृपया सभी तक पहुचाएं।

धन्यवाद.....

🙏🙏🙏🙏🙏

डॉ. आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

9935656181

drrktripathieh@gmail. com

लिंफैटिको 1

L1

......

L ग्रुप रस एवं रक्त के बीच की औषधि है ।

रस रक्त दोनों पर लिंफेटिको को अपना प्रभाव रखती है

यह औषधि लिम्फ की औषधि मानी गई है।

लिंफैटिको लसिका ग्रंथियों , लसिका वाहिकाओं तथा लसिका की सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

अतः इसका मुख्य प्रभाव लसिका के सफेद कणों पर है । रक्त जब तक तैयार नहीं हो जाता ,

तब तक स्वेत लसिका परिवर्तन के काम आती है, जब रक्त शुद्धीकरण या ऑक्सीकरण हेतु श्वसन तंत्र में पहुंचता है । तो रक्त की लाल कण विद्युत शक्ति को ऑक्सीजन से लेकर रक्त में शोषण करते हैं ।

इस पर भी लिंफेटिक को का प्रभाव है । अतः यह औषधि रस एवं रक्त प्रवाह के विद्युत ऊर्जा पर भी प्रभाव रखती है । लसिका का संचालन एवं संगठन को नियंत्रित करती है।

......

चिकित्सा के दौरान लिंफेटिक चैनल हेतु तीन अशुद्धियां मानी जाती है।

1 - स्करोफ्लोसो

2 - लिंफेटिको

3- एन्ज़ियाटिको

क्योंकि लिंफेटिको का प्रभाव लिम्फ - रक्त पर पड़ता है ।

जबकि स्करोफ्लोसो का प्रभाव लिम्फ पर है ।

तथा एन्ज़ियाटिको का प्रभाव रक्त पर है ।

जबकि लिम्फाइटिको का प्रभाव रक्त एवं रस दोनों पर पूर्ण रूप से है।

......

स्करोफ्लोसो ग्रुप के औषधि का प्रभाव उन अंगों पर है । जो लसिका तैयार करते हैं ।

मेटाबोलिक के जो अंग लसिका को हृदय की ओर ले जाने वाली प्रणालियों में पहुंचाते हैं । इसका कार्य उस समय शुरु होता है , जब भोजन मुंह में प्रवेश करता है ।

और स्करोफ्लोसो का कार्य तब खत्म हो जाता है। जब लसिका बनकर तैयार हो जाती है ।

......

लिंफेटिको ग्रुप जब लसिका बनकर तैयार हो जाती है।

रक्त में ऑक्सीजन का शोषण हो जाता है ।

लसिका को वापस लाने वाली प्रणालियों और ग्रंथियों जो कि त्वचा के सूत्रों में पतली-पतली नलिका का जाल फैला हुआ है ।।

शरीर में आपूर्ति के कारणों से उत्पन्न सभी लिंफेटिक रोग एवं लिंक ग्रंथियों एवं संचार की उत्तम औषधि लिम्फाइटिको है।

......

एन्ज़ियाटिको :

रक्त के लाल कणों पर मुख्य प्रभाव रखती है। धमनियों के अंदर उपस्थित लाल कणो यानी आरबीसी पर अच्छा कार्य है।

......

लिम्फाइटिको का प्रभाव रक्त की बर्बादी के कारण रक्त की कमी, लसिका की बर्बादी के कारण रक्त का पतला पड़ जाना, लसिका की कमी,ग्रंथियों में बतौड़ी , ग्रंथियों में प्रदाह सूजन स्वेद ग्रंथियों की खराबी से खुजली, त्वचा पर दाने , नाकड़ा , टांसिल की ग्रंथियों में सूजन, शैलेस्मिक कलाओं का पक जाना , रक्त की कमी से अकौता, कान बहना, ग्रंथियों का बढ़ जाना, फोड़ा फुंसी , मुंह की शैलेस्मिक कला एवं मांस का बढ़ना , छाती की पीड़ा दमा , सिर दर्द , मासिक धर्म की कमी , त्वचा से भूसी उतरना , त्वचा में कुछ रेंगता हुआ मालूम पड़ना , दांत का नासूर , नपुंसकता , घेंघा रोग गठिया , पागलपन के दौरे स्मरण शक्ति की निर्मलता बच्चों में नस का रोग मांस पेशियों की निर्बलता हाथ पैर के तलवों में जलन, ज्यादा पसीना आना , प्रोस्टेट रस का बहना , दांत दर्द , सुजाक , मोटापा खून की कमी , खून का मवाद में मिल जाने इसके कारण खून का जहरीला हो जाना , मियादी ज्वर, प्रसूति ज्वर , सेप्टिक ज्वर सड़े-गले घाव , गैंग्रीन अपेंडिसाइटिस , कारबंकल , मैनिंजाइटिस, इंसेफेलाइटिस , डिप्थीरिया विषैले कीड़े मकोड़ों का काटना , टीकाकरण के बाद उत्पन्न रोग , खुजली इंफ्लुएंजा नई सर्दी , पुरानी सर्दी , बार बार जुकाम खांसी सुख ने की वजह की वजह से बार-बार छींक आना , डायबिटीज ,औरतों में पेशाब की खराबी एवं बेचैनी, हाथ एवं पैर का ठंडा रहना, प्यास ना लगना , कमजोरी , पीलिया पेशाब में जलन , मांस पेशियों में खिंचाव , तनाव नाड़ी का धीमा चलना इस पर मेट्रो रिया , रक्तस्त्राव इत्यादि अनेकों रोगों में लिम्फाइटिको का सफलतापूर्वक प्रयोग किया जाता है।।

......

लिम्फाइटिको का प्रथम डालूशन ग्रंथियों के कार्य को बढ़ा देती है ।

अतः ग्रंथियों के नेगेटिव रोगों में दिया जाता है ।

जैसे : दस्त फोड़े , वायुशुल , शारीरिक निर्बलता मांस पेशियों की बाई , पसीना रुकने की वजह से चर्म रोग , सूखी खुजली श्वेत रक्त की कमी ग्रंथियों में सूजन ट्रांसल आदि में प्रयोग किया जाता है।

......

तथा

ग्रंथियों के बढ़े हुए कार्य को कम करने के लिए नेगेटिव सोच दिया जाता है। जैसे प्रोस्टेट रस का बहना , बच्चों का लसिका रोग , ग्रंथियों में रक्त संचार एवं कड़ापन , जुडी बुखार सिरदर्द , मिर्गी , गर्भाशय में रक्त संचार , पागलपन का दौरा, मासिक धर्म की पीड़ा प्रोस्टेट ग्रंथि का बढ़ना, त्वचा पर दाने , लसिका स्त्राव, कमर दर्द बतौली बाई प्रदाह , मधुमेह गठिया ,एडिशन डिजीज ब्राइट डिजीज ,पेशाब में एल्ब्यूमिन का आना, गुर्दा एवं अंडकोष का नासूर बाल गिरना इत्यादि रोगों में नेगेटिव डोज़ दिया जाता है।

......

विषैले जानवरों का काटना, बाल झड़ने में प्रयोग किया जाता है ।

आग एसिड से जल जाना एवं छिल जाने पर भी लिम्फाइटि

को का प्रयोग किया जाता है।

......

कुल मिलाकर लिम्फाइटिको

लसिका ग्रंथियों एवं लसीका वाहिकाओं तथा लसिका पर मुख्य प्रभाव रखने वाली प्रमुख इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधि है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी

के अनुसार कितने प्रकार के प्रकृति (टेम्परामेंट) होते हैं???

07/06/2018, 07:08 - Chinu2: इलेक्ट्रोपैथी के अनुसार पाँच प्रकार के प्रकृति होते है।

1-कफ

2-रक्त

3-पित्त

4-वात

5-मिश्रित

क्या है ओवेरियन सिस्ट?

— — — — — —

ओबरी से हर महीने पीरियड्स के दौरान अंडे के बनने और खंडित होने की प्रक्रिया में आने वाली बाधाओं के परिणाम स्वरूप ओवेरीयन सिस्ट का निर्माण हो जाता है !

कभी कभी महिलाओ द्वारा लिये गये गर्भ गिराने वाली दवाओं के दुष्परिणाम स्वरूप ये समस्या उत्पन्न हो जाती है !

ओबरी मे बने अंडे के बाहर नही निकल पाते ,तो ओबरी मे ही टूट फूट कर संक्रमण उत्पन्न करने लगते हैं !और ओबरी मे एक या कई गाँठ बना लेते है !

इसे ही ओवेरीयन सिस्ट कहते हैं।

अक्सर अंडा बनने वाली दवाइयों के प्रयोग से भी अंडाशय में सिस्ट बन जाता है। इसका प्रमुख लक्षण पेट के निचले हिस्से मे दायें या बायें ओर में दर्द होता है।

अल्ट्रासाउंड के बढ़ते प्रचलन के कारण ओवेरियन सिस्ट का दिखायी देना भी सामान्य हो गया है।

ये एक तरफ तो महिला को सचेत करता है। वहीं दूसरी ओर अनावश्यक चिंता में भी डालता है।

अंडाशय में सिस्ट का आकार 2-3 सेंटीमीटर से लेकर पूरे पेट को घेर सकने वाला हो सकता है। सिस्ट फंक्शनल अथवा बिनाइन (नॉन कैंसरस) होते हैं।

यदि किसी ओवरी में सिस्ट के कारण लक्षण उत्पन्न होते हैं ,

या सिस्ट का आकार 10 सेमी से अधिक है, तो इसके इलाज की आवश्यकता होती है।

फोड़ा-

ओवरी के संक्रमण से ग्रसित हो जाने पर इसमें फोड़ा हो जाता है। इसके लक्षणों में बुखार और पेट में दर्द हो सकता है।

ओवरी में कैंसर-

यह गंभीर बीमारी है, इसके लक्षण दिखाई नहीं देते हैं और बीमारी काफी आगे बढ़ जाती है।

अगर परिवार में पहले कभी किसी को कैंसर हुआ है तो समय-समय पर जांच कराते रहना चाहिए।

कृपया ध्यान दें

यदि सिस्ट रजोनिवृति के बाद दिखायी दे, ठोस हो और कई सारी हो, पेट में पानी भर जाए ,

तो ओवरी में कैंसर का अंदेशा बढ़ जाता है। ऐसा होने पर बायोप्सी की जाती है। इन लक्षणों के उभरने पर फौरन अपने डॉक्टर से मिलें।

इसके प्रमुख लक्षण
🔜🔜🔜🔜🔜

1-पेट के निचले हिस्से में दर्द होना।

2-पेशाब करने में दिक्कत होना।

3-पेट में अचानक तेज दर्द होना और उल्टी होना।

4-मासिक के साथ ही तेज दर्द 4-5 दिनों तक रहना।

5-शौच के समय और सहवास के समय दर्द होना।

इन बातों का रखें ध्यान
🔜🔜🔜🔜🔜🔜

95% अंडाशय सिस्ट कैंसर रहित होते हैं।

इलाज आकार और लक्षण पर निर्भर करता है।

अनावश्यक तौर पर अंडाशय नहीं निकालने चाहिए।

ओवरी के कैंसर के प्रति सचेत रहें। इलेक्ट्रो होम्योपैथी डॉक्टर से तुरंत सम्पर्क करें ।

*इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा *

C1+S1+A1+L1

D3

S10+WE+F1

D6

Ven1

D6

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दवाओं से 3 माह के धैर्य पूर्वक चिकित्सा करने से ये पूरी तरह ठीक हो जाता है !

🙏🏻🙏🏻🙏🏻🙏🏻🙏🏻🙏🏻

डॉ. आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

9935656181

प्लांट एसेन्स या कोहबेशन टिंचर

का

एक भाग + 9 भाग आर एस मिलाकर 9 स्ट्रोक देने पर

Decimel 1 या D1 बनता है।

......

इस D1 से 1:9 के अनुपात में 9स्ट्रोक देने से Decimel 2 या D2 बनता है।

......

इस D2से 1:9के अनुपात में 9 स्ट्रोक देने से Decimel 3 या D3 बनता है।

अब इस Decimel 3 या D3 से 1:47 के अनुपात में आर एस या डिस्टिल वाटर मिला कर 48 स्ट्रोक देने पर डायलुशन 1st मिलता है।

अब कन्फ्यूज़न यही से शुरू हो जाता है।

Decimel 1 को D1 ,D2,D3कहते हैं।

और

Dialution1 को भी D1,D2,D3 कुछ लोग समझते हैं।

जबकि डालूशन को 1st,2nd& 3rd ,4rth एवं 5th dialution के रूप में पुरानी पुस्तकों व्यक्त किया गया है।

🙏🏻🙏🏻🙏🏻🙏🏻🙏🏻

डॉ. आर.के.त्रिपाठी

बलरामपुर

9935656181